युग परिवर्तन क्यों ? किसलिए ?

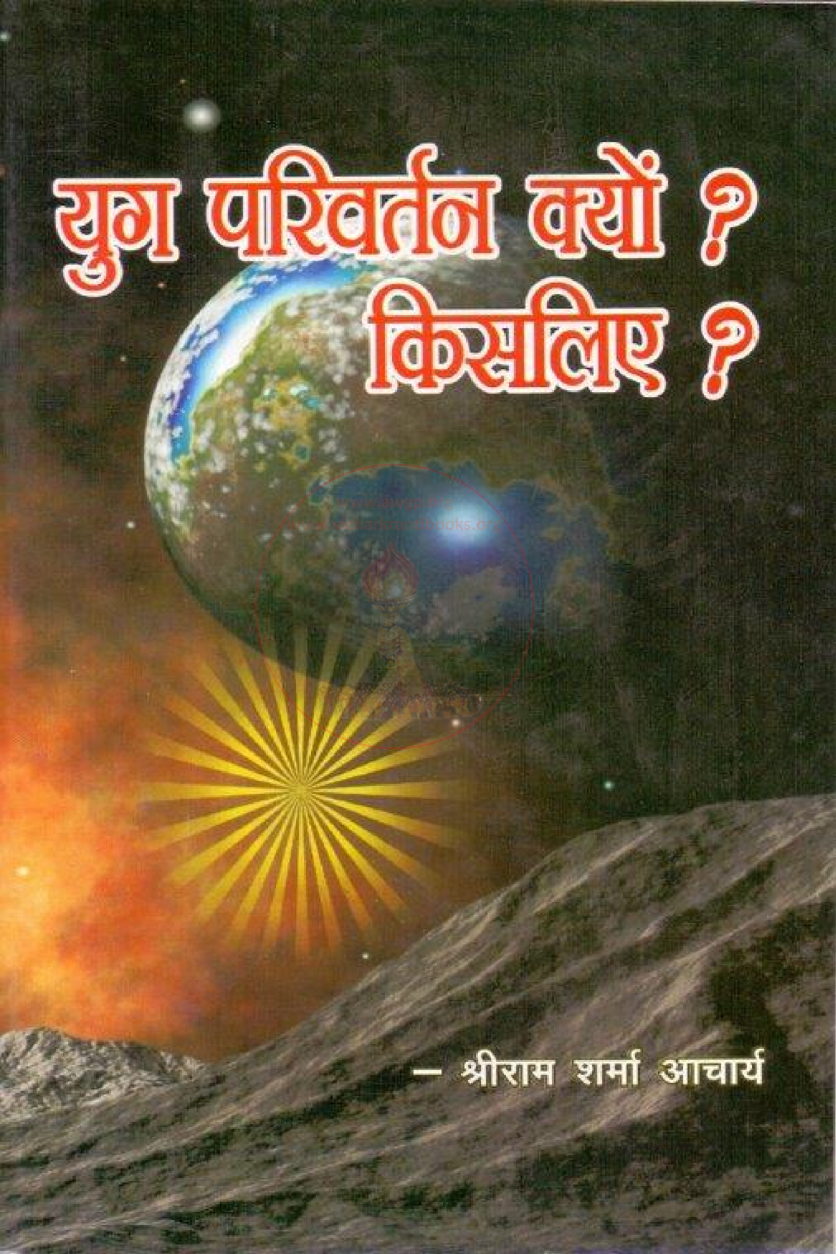

— श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.akhandjyotibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

युग परिवर्तन क्यों ? किसलिए ?

☆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१० मूल्य : १२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

ऐसी परिस्थितियों में समय न चूककर बढ़-चढ़कर अपने समय धन श्रम की श्रद्धाँजलि अर्पित करने हेतु सबको आगे आना चाहिए। इसके लिए कुछ छोड़ना व तब कुछ अपनाना बन पड़ेगा। लोभ-मोह के बंधन त्यागने की बात कही जा चुकी है। यश-लिप्सा जैसी भावनाओं से मुक्ति पाकर और ब्राह्मणोचित निर्वाह का पुरातन काल के पुरोहित जैसा जीवन जीने का भावी निर्धारण किया जा सके तो युग शिल्पी की भूमिका निभाने हेतु कोई भी आगे आ सकता है। अपने परिवार को सुसंस्कारी स्वावलंबी बनाने की बात सोचते ही स्वयं अपने आप को बदलने की बात आती है। इस तनिक से पुरुषार्थ से वह सौभाग्य सहज ही मिल जाता है जो अर्जुन, हनुमान या नेहरू, पटेल को मिला। प्रज्ञावतार का प्रवाह तो सहज ही बह रहा है। दैवी चेतना के इस शुभ प्रयोजन में जो भी सहभागी बनेगा वह स्वयं भी धन्य होगा। प्रज्ञा युग लाने में उसकी भूमिका की गणना आने वाले समय में होगी। ऐसे अवसर गंवा देने वाले हमेशा पछताते व समय या भाग्य को दोष देते पाए जाते हैं। नव युग आना है, आएगा। प्रज्ञावतार का लीला संदोह रचा जाना है, रचा ही जाएगा। प्रज्ञा परिजन कैसे इसमें अपनी भूमिका नियोजित करें, उसे विचारने का समय अभी ही है, बाद में आने वाला नहीं।

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रज्ञावतार का लीला-संदोह एवं परिवर्तन की वेला

इन दिनों प्रगति और चमक-दमक का माहौल है, पर उसकी पन्नी उघाड़ते ही सड़न भरा विषघट प्रकट होता है। विज्ञान, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र की प्रगति सभी के सामने अपनी चकाचौंध प्रस्तुत करती है। आशा की गई थी कि इस उपलब्धि के आधार पर मनुष्य को अधिक सुखी, समुन्नत, प्रगतिशील, सुसंपन्न, सभ्य, सुसंस्कृत बनने का अवसर मिलेगा। हुआ ठीक उलटा। मनुष्य के दृष्टिकोण, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता घुस पड़ने से संकीर्ण स्वार्थपरता और मत्स्य-न्याय जैसी अतिक्रमणता का प्रवाह चल पड़ा। मानवी गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता की उपेक्षा अवमानना हुई और विलास, संचय, पक्षपात, तथा अहंकार का दौर चल पड़ा। जिस लोभ, मोह और अहंकार को कभी शत्रु मानने, बचने, छोड़ने की शालीनता अपनाई जाती थी अब उसका अता-पता नहीं दीखता और हर व्यक्ति उन्हीं के लिए मरता दीखता है। परंपरा उलटी तो परिणति भी विघातक होनी चाहिए थी, हो भी रही है। शक्ति संपन्नता एक ओर—विनाश-विभीषिका दूसरी ओर। देखकर हैरानी तो अवश्य होती है, पर यह समझने में भी देर नहीं लगती कि भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण अपनाने पर भौतिक समृद्धि से अपना ही गला कटता है, अपनी ही माचिस से आत्मदाह जैसा उपक्रम बनता है।

चौंधियाने वाली परत का पर्दा उघाड़ते ही प्रतीत होता है कि सब कुछ खोखला हो चला और घुना हुआ शहतीर किसी भी क्षण धराशायी होने की स्थिति में पहुँच गया। जन-जन का स्वास्थ्य खोखला होता जा रहा है। दुर्बलता और रुग्णता से हर काया जर्जर हो रही है। लोग आधी अधूरी आयुष्य पूरी होते-होते मौत के मुँह में घुस पड़ते हैं। मानसिक संतुलन के क्षेत्र में हर किसी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिंतित, भयभीत, आशंकित, खिन्न, विपन्न, असंतुष्ट एवं उद्विग्न देखा जाता है।

तनावग्रस्त मस्तिष्क न किसी को रात में चैन से सोने देता है और न दिन में संतोष उल्लास का अनुभव होने देता है। उद्विग्नता एक प्रकार की विक्षिप्तता है जिससे मनुष्य मात्र अशुभ ही सोचता और अनुचित करता है। इस स्थिति की व्यापकता को अपनी या पड़ौसियों की मनःस्थिति का पर्यवेक्षण करके भली प्रकार जान सकता है।

लिप्सा, अपव्यय, दुर्व्यसन, आलस्य, प्रमाद, अहंकार, ठाट-बाट और कुरीतियों के माहौल में हर किसी की आर्थिक व्यवस्था असंतोषजनक स्थिति में रह रही है। जो हस्तगत होता है, कम पड़ता है। फलतः लोग भ्रष्टाचार पर उतरते हैं। न करने योग्य भी बहुत कुछ करते हैं। अपराधी प्रवृत्ति, स्वभाव अभ्यास में सम्मिलित होती जा रही है। आक्रमण न सही, छल या शोषण सही। येनकेन प्रकारेण मनुष्य भ्रष्ट उपार्जन में संलग्न है। फिर भी अपव्यय की खाई सुरसा का मुख बनकर चौड़ी ही होती जाती है। पाटने से पटती ही नहीं।

परिवार में न सुख है, न चैन, न स्नेह, न सहयोग, न सामंजस्य। हर सदस्य को अपनी पड़ी है। जेलखानों, सरायों, मुसाफिरखानों में भी भीड़ एक साथ रहती है। भेड़ें भी एक बाड़े में बंद रहती हैं। परिवारों की स्थिति प्रायः ऐसी ही है। लोग अंधाधुंध प्रजनन पर उतारू और अपनों-अपनों को विलासी बनाने के लिए, उनकी प्रसन्नता खरीदने के लिए श्रम, समय और धन पानी की तरह बहाते होली की तरह जलाते हुए देखे जाते हैं फिर भी उस क्षेत्र में दुष्प्रवृत्तियों का अनुपात ही बढ़ता जाता है। जिन घर घरोंदों में कभी स्वर्ग का दर्शन होता था उनमें आज विग्रह और असंतोष के अतिरिक्त और कहीं कुछ ढूँढ़े नहीं मिलता।

इस समय आर्थिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार और नैतिक क्षेत्र का अनाचार समाज व्यवस्था की कमर तोड़े दे रहा है। सामाजिक कुरीतियों के कारण होने वाली बर्बादी को समझते सभी हैं, पर उन्हें छोडता कोई नहीं। उनके लाभदायक पक्ष को जब छोड़ा नहीं जाएगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो हानिकारक पक्ष से भी छुटकारा न मिलेगा। बेटी के विवाह में सुधारवादी और बेटे के विवाह में परंपरावादी बनने वाले उस कुचक्र से छूटते ही नहीं। दुरंगी चाल, दोगली नीति अपनाने वाले कोल्हू के बैल की तरह ही पिलेंगे। समाज के हर क्षेत्र में अवांछनीयताओं का माहौल संव्याप्त है।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में सर्वग्राही जनसंख्या वृद्धि, जन-जन के स्वभाव में सम्मिलित अपराधी प्रवृत्ति, वर्ग-विद्वेष, संचय और विलास का कूटनीतिक कुचक्रों का कुछ ऐसा माहौल बन गया है कि विग्रह और आक्रमण के अतिरिक्त और किसी को कुछ सूझता ही नहीं। संकीर्णता की बढ़ोत्तरी, भाषा, क्षेत्र, संप्रदाय, वर्ग आदि की आड़ में कुछ को लाभ कमाने के लिए उत्तेजित करती और दूसरों को बर्बाद कर देने पर उतारू दीखती है। एकता, समता, न्याय, औचित्य और दूरगामी परिणामों की मानो किसी को कोई चिंता ही न रह गई हो। ऐसी स्थिति में समस्याओं का समाधान निकले तो कैसे ? निकाले तो कौन निकाले ? पुलिस, कानून, जेल, कचहरी की सीमा नगण्य है। वह हजारों अपराधियों में से एक दो को दंडित कर पाती है। जो जेल जाते हैं वे सुधरने के स्थान पर अधिक ढीठ और प्रशिक्षित होकर लौटते हैं। गृहयुद्ध, क्षेत्रीय युद्ध और विश्व युद्ध इसी माहौल की देन है।

पिछले दो महायुद्ध हो चुके हैं। अणु आयुधों की खनखनाहट पग-पग पर विश्व विनाश की, महाप्रलय की चुनौती देती है। बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों के अदृश्य वातावरण को विषाक्तता से भर दिया है और रुष्ट प्रकृति आए दिन दैवी प्रकोप के रूप में अपना कोप बरसाती है।

वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति ने वायु प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण, रेडियो विकिरण की मात्रा इतनी बढ़ा दी है कि दम घुटने, पीढ़ियाँ अपंग होने से लेकर ध्रुवों के पिघलने, समुद्र उमड़ने और हिमयुग आ धमकने तक की ऐसी विभीषिकाएँ सामने हैं जो इस ब्रह्माण्ड को, स्रष्टा की इस सर्वोत्तम कलाकृति धरती को चुटकी बजाते इस अंतरिक्ष में धूलि बनाकर उड़ा सकती हैं। संकट काल्पनिक नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वास्तविक है। शुतुर्मुगों को तो अपनी मौत भी दिखाई नहीं पड़ती। पर जिन्हें वस्तुस्थिति के पर्यवेक्षण की सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है वे जानते हैं कि संकट कितना गहरा है और किस प्रकार मानवी अस्तित्व जीवन-मरण के झूले में इस समय झूल रहा है।

स्रष्टा ने इस भूलोक की व्यवस्था बनाए रहने और प्रगति के लिए प्रयत्नरत रहकर अपने वर्चस्व को प्रमाणित करने और मनुष्य से भी अधिक ऊँचे ऋषि-देवता अवतार के रूप में अपने को सिद्ध करने की सुविधा प्रदान की है। युवराज का गौरव भी है और उत्तरदायित्व भी। यदि उसका निर्वाह ठीक तरह नहीं तो पदच्युत होने, अधिकार छिनने और राष्ट्रपति शासन लागू होने का भी प्रावधान है। इन दिनों यही होने जा रहा है। समय-समय पर यह होता भी रहा है। मनुष्य ने पतन, पराभव के गर्त में गिरना, असुरता का पृष्ठ पोषण करना और विनाश विग्रह का सृजेता—आस्था संकट जब-जब खड़ा किया है तब-तब स्रष्टा ने विनाश का क्षण आने से पूर्व बागडोर थामी और जिम्मेदारी सँभाली है। अधर्म का नाश और धर्म का संरक्षण, साधुता का परित्राण और दुष्कृत्यों के विनाश वाले अपने वचन का परिपालन किया है। मनुष्य गिरने या गिराने की उच्छृंखलता तो किसी सीमा तक कर सकते हैं पर द्रुतगति से विनाश चक्र घुमा देने के उपरांत फिर उसे रोकना सामर्थ्य से बाहर हो जाता है। ऐसे विनाश प्रवाह को रोकने और उलटे को उलटकर सीधा कर देने की सामर्थ्य उसी में है जिसने इस सृष्टि को बनाने के साथ-साथ नियंत्रण में रखने का भी दायित्व सँभाला है।

यह समय है जब स्रष्टा ने युग परिवर्तन के तूफानी प्रवाह का सूत्र संचालन किया है। इससे पूर्व जब जैसी परिस्थितियाँ रही हैं तब उस स्तर के अवतार प्रकट हुए हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी के समय में अवतारों के प्रवाह एवं कार्यक्रम सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप बने हैं। इन दिनों की असुरता अनास्था संकट के रूप में उत्कृष्टता के देवत्व को, मानवी गरिमा को भस्मसात करने के लिए वृत्रासुर की तरह अट्टहास करती दीखती है। इसका निवारण महाप्रज्ञा के द्वारा ही संभव है। इसलिए इन दिनों भगवान आद्यशक्ति गायत्री के रूप में,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रज्ञा अभियान एवं विचार क्रांति के रूप में प्रकट हो रहे हैं। इसी को प्रज्ञावतार कह सकते हैं। पौराणिक निष्कलंक भी यही है। निष्कलंक तो इस संसार में दूरदर्शी विवेक ही है। प्रज्ञा उसी को कहते हैं।

अवतार एक तूफानी प्रवाह होता है। उसके अदृश्य उभार को कार्यान्वित करने के लिए जागृत आत्माएँ आगे आती हैं। पर्वत शिखरों पर सर्वप्रथम सूर्य-किरणें चमकती हैं। उषाकाल का आभास पाकर सर्वप्रथम कुक्कुट बाँग लगाता है। जागरूक देवात्माएँ ऐसे समय में भगवान की इच्छा को पूर्ण करने के लिए वाहन बनकर अपने पुरुषार्थ का परिचय देती हैं। हनुमान, अंगद, अर्जुन, भीम से लेकर बुद्ध, गाँधी आदि की अपने समय में ऐसी ही भूमिका रही है। यह सब दृश्यमान कठपुतलियाँ थीं। उनके पीछे सूत्र-संचालन करने वाली अवतारी अदृश्य शक्ति ही अपनी भूमिका निभाती रही है। अग्रगामियों को प्रिय मिलना तो स्वाभाविक है। आँधी के साथ उड़ने वाले तिनके-पत्ते एवं रेत-कण भी आकाश चूमते हैं। चक्रवात की प्रचंडता देखते ही बनती है। ये सब अवतारी शक्ति का साथ देने उसके प्रवाह में सम्मिलित होने का ही चमत्कार है।

अवांछनीयता की भट्टी में गलाया जा रहा है और पिघलाकर उसे उपयोगी स्वरूप में ढाला जा रहा है। युग संधि का प्रभात पर्व इसी महान परिवर्तन का ऐतिहासिक समय है। तमिस्रा का समापन और दिनमान का उदय इसी वेला में हो रहा है। सन् २००० तक का समय उसी उथल-पुथल से भरा-पूरा समझा जाना चाहिए।

इन दिनों असाधारण परिवर्तन हो रहे हैं, होने जा रहे हैं। इस उथल पुथल के गर्भ से प्रज्ञा युग का जन्म होगा, उसके साथ उज्ज्वल भविष्य की समग्र संभावनाएँ जुड़ी हुई हैं। यों इससे पूर्व प्रसव वेदना भी कम नहीं सहनी पड़ेगी। सड़े फोड़े का मवाद निकाल बाहर करने के लिए कष्टकर आपरेशन भी तो होता है।

सन्निकट प्रज्ञा युग के अवतरण की परोक्ष प्रेरणा का वहन प्रत्यक्ष रूप से प्रज्ञा परिजनों को करना होगा। उन्हीं को रीछ वानरों की, ग्वाल बालों की, बौद्ध परिव्राजकों की, सत्याग्रहियों की भूमिका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निभानी होगी। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण में उन्हीं को भागीरथी पुरुषार्थ की पुनरावृत्ति करनी होगी।

देखने में ऐसे झंझटों में पड़ना घाटे का सौदा प्रतीत होता है, पर वस्तुतः यह है असीम नफा कमाने का व्यवसाय। हनुमान ने कुछ खोया तो सही, पर पाया उससे भी अधिक। विभीषण, सुग्रीव, यदि झंझट में न पड़ते, साथ न देते तो पुराने ढर्रे का गुजारा भर करते रह सकते थे, जो ऐतिहासिक श्रेय मिला, प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभ उठाया उससे वे वंचित ही रह गए होते, केवट और शबरी को कुछ तो त्याग करना ही पड़ा। गिलहरी को भी कुछ तो व्यर्थ का सिरदर्द उठाना पड़ा पर तथ्यतः उन्होंने खोया कम और पाया अधिक। गाँधी के सहयोगी विनोबा, नेहरू, पटेल राजगोपालाचार्य, राजेन्द्र बाबू, जाकिर हुसैन, आदि आरंभ में तो उन्हीं मूर्खों में गिने गए जो आदर्शों के लिए घाटा उठाते और काम हर्ज करते हैं। इन सब को कुटुम्बी, मित्रों, संबंधियों ने रोका भी था और अपने मतलब रखने की चतुरता का परामर्श ही नहीं दबाव दिया था। ऐसे आड़े समयों पर भी महामानवों की वरिष्ठता परखी जाती है और वह भी खरी उतरती है तो न केवल उनके लिए वरन उनके समूचे परिकर के लिए श्रेय प्रदान करती है। आड़े समयों में एक दुर्भाग्य भी है कि जो वरिष्ठ होते हुए भी असमंजस ग्रस्त रहते व अंतःप्रेरणा को कुचलते रहते हैं उन्हें बाद में पछताना भी बहुत पड़ता है।

साहसी कहाँ से कहाँ चले गए और संकोची, भीरू, आलसी यों रहते तो सदा ही घाटे में हैं पर ऐसे स्वर्णिम अवसर गँवा देने पर साथियों की तुलना में जब अपने दुर्भाग्य को देखते हैं तो दुःख और प्रायश्चित भी कम नहीं होता। जेल जाने वालों में से बहुतों को मिनिस्टर बना देखकर कितने ही सिर धुनते हैं और कहते हैं, उन दिनों हमारी संकीर्णता ही आड़े आई, अन्यथा हमें भी वैसे ही श्रेय पाने में कोई कठिनाई न पड़ती।

प्रज्ञा परिवार में ऐसे ही मूर्धन्यों का समुदाय है। उन्हें यही परामर्श दिया और अनुरोध आग्रह किया जाता है कि वे समय को चूकें नहीं। इस आपत्तिकाल में युग धर्म निबाहें। छोटे-मोटे बहानों को आड़े न आने दें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अग्नि कांड, भूकंप, बाढ़, महामारी, दुर्भिक्ष, दुर्घटना जैसे आपत्तिकालीन अवसरों पर अपना काम हर्ज करके अंतरात्मा की पुकार पर सहायता के लिए दौड़ना पड़ता है। इसमें आर्थिक दृष्टि से घाटा भी पड़ता है। पर वह हानि के बदले में जो आत्म-संतोष, लोक-सम्मान और पुण्य-फल के रूप में दैवी अनुग्रह का लाभ प्रदान करती है उसे देखते हुए अंततः इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि जो खोया था उससे अधिक पा लिया गया। बीज आरंभ में गलता है, पर कुछ ही समय बाद वह अंकुरित, पल्लवित एवं फूलों से लदा हुआ विशाल वृक्ष बनता है तो स्पष्ट हो जाता है कि जो कदम कभी मूर्खता का लगता था अंततः चरम बुद्धिमत्ता का ही सिद्ध हुआ। परमार्थ, सो भी उपयुक्त समय पर उच्चस्तरीय प्रयोजनों के लिए बन पड़े तो समझना चाहिए कि सोना सुगंधित जैसा सुयोग सौभाग्य बन गया।

ऐसी परिस्थितियों में समय न चूककर बढ़-चढ़कर अपने समय धन श्रम की श्रद्धाँजलि अर्पित करने हेतु सबको आगे आना चाहिए। इसके लिए कुछ छोड़ना व तब कुछ अपनाना बन पड़ेगा। लोभ-मोह के बंधन त्यागने की बात कही जा चुकी है। यश-लिप्सा जैसी भावनाओं से मुक्ति पाकर और ब्राह्मणोचित निर्वाह का पुरातन काल के पुरोहित जैसा जीवन जीने का भावी निर्धारण किया जा सके तो युग शिल्पी की भूमिका निभाने पर कोई आगे आ सकता है। अपने परिवार को सुसंस्कारी स्वावलंबी बनाने की बात सोचते ही स्वयं अपने आप को बदलने की बात आती है। इस तनिक से पुरुषार्थ से वह सौभाग्य सहज ही मिल जाता है जो अर्जुन, हनुमान या नेहरू, पटेल को मिला। प्रज्ञावतार का प्रवाह तो सहज ही बह रहा है। दैवी चेतना के इस शुभ प्रयोजन में जो भी सहभागी बनेगा वह स्वयं भी धन्य होगा। प्रज्ञा युग लाने में उसकी भूमिका की गणना आने वाले समय में होगी। ऐसे अवसर गंवा देने वाले हमेशा पछताते व समय या भाग्य को दोष देते पाए जाते हैं। नव युग आना है, आएगा प्रज्ञावतार का लीला संदोह रचा जाना है, रचा ही जाएगा, प्रज्ञा परिजन कैसे इसमें अपनी भूमिका नियोजित करें उसे विचारने का समय अभी ही है, बाद में आने वाला नहीं।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या इस वसुधा का अंत सन्निकट है ?

समग्र मानवता पर इन दिनों ऐसे संकट के बादल छाए हैं जिन्होंने उस संभावना को सत्य बना दिया है जिसमें मनीषी वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन ने तीसरे युद्ध के आणविक आयुधों से मानवी सभ्यता के पूरी तरह नष्ट होने की भविष्यवाणी की थी। एक दृष्टा के नाते उन्होंने एक पत्रकार के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि 'प्रगति की यही अदूरदर्शी वेलगाम नीति रही तो निस्संदेह चौथा युद्ध आदिम मनुष्यों द्वारा लड़ा जाएगा, क्योंकि सभ्यता संस्कृति के नष्ट हो जाने पर स्थिति वही उत्पन्न हो जाएगी जहाँ से मानव ने उठकर चलना, अपनी गुजर-वसर करना सीखा था।

युद्ध लिप्सा कितनी घातक हो सकती है, इसकी कल्पना आज के समय में करना कठिन नहीं। आज मानव कम्प्यूटर साइंस की दिशा में इतना आगे बढ़ गया है कि उस आधार पर आगत की जानकारी प्राप्त करना असंभव नहीं। इन दिनों विश्व के मूर्धन्य राजनेताओं के कथन, युद्ध संबंधी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्य आँकड़े एक ही निष्कर्ष प्रकाश में लाते हैं कि अब युद्ध मनुष्य के अधिक समीप है। कभी भी कहीं से कोई चिनगारी फूटने भर की देर है और विश्वयुद्ध छिड़ सकता है।

मारक अस्त्रों की शक्ति और कुटिल रणनीति के निर्माण में संलग्न विश्व के महारथियों का अभी भी यह विश्वास है कि वे जहाँ भी जाएँगे, आक्रमण करके अभीष्ट अपहरण करने में सफल हो सकेंगे। इसमें वे यह भी नहीं देखते कि इसके साथ ही उनके स्वयं के विनाश की संभावनाएँ भी विद्यमान हैं, कुटिलता की शाखा-प्रशाखाएँ यही ताना-बाना बुन रही हैं कि किस प्रकार प्रतिपक्ष को चकमा देने की कला को तिलिस्म जादू के स्तर तक पहुँचाया जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्त आँकड़े बताते हैं कि जापान पर गिराए हुए अणु बम की तुलना में अब दस लाख गुने अधिक शक्तिशाली आयुध बनाए जा चुके हैं। इनके परीक्षण से जो वातावरण विषाक्त हुआ है उसने शांत ध्रुवों को भी नहीं छोड़ा। भूगर्भ में विस्फोट, समुद्र में अणु ऊर्जा संचालित पनडुब्बी तथा अंतरिक्ष में छाए सैटेलाइट्स ने किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार से अछूता नहीं छोड़ा है। यह प्रक्रिया अभी दशाब्दियों तक वातावरण में छाई रहेगी और अन्न, जल, साँस, वनस्पति आदि के माध्यम से मनुष्यों एवं प्राणियों के शरीर में प्रवेश करके दुखद परिणाम उत्पन्न करती रहेगी।

इन दिनों शस्त्रों पर हो रहा खर्च मात्र बीस ही वर्ष में २०० गुना हो गया है। धनशक्ति का महत्त्व तो अपने स्थान पर है ही, उपेक्षा उस मूर्धन्य प्रतिभा शक्ति की भी नहीं होनी चाहिए जो जनशक्ति के व्यापक विध्वंस की योजना बनाने हेतु इस कार्य में लगी है। अंतर्राष्ट्रीय मिलिट्री स्ट्रेटेजी संस्थान लंदन के अनुसार लगभग पच्चीस हजार प्रतिभाएँ और उनके लाखों सहायक इस कार्य में लगे हैं जिन्हें बौद्धिक क्षमता की दृष्टि से—वैज्ञानिक जानकारी के नाते सर्वोच्च स्तर की कहा जा सकता है। यदि ये ही विभूतियाँ सृजन प्रयोजनों में लगी होतीं तो संभवतः विश्व का कायाकल्प कर डालतीं।

इस सदी में तृतीय विश्वयुद्ध की संभावना की चर्चा के पूर्व यदि विगत का ही अवलोकन करें तो पाते हैं कि १८१० से अब तक लगभग १६८ बड़े स्तर के युद्ध हो चुके हैं एवं २६ करोड़ ३५ लाख व्यक्ति युद्ध विभीषिका से कालकवलित हुए हैं। इतने पर भी युद्धोन्माद शांत नहीं हुआ है। अभी भी युवा पीढ़ी में प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध की फिल्में-कथानक उतने ही लोकप्रिय हैं। इन्हीं की सर्वाधिक माँग भी है। साहस हेतु मोर्चे पर लड़ने का शिक्षण जीवन समर में भी जरूरी है परंतु यह जब विकृत मनःस्थिति के रूप में पनपने लगता है। तो इसे सामूहिक आत्महत्या की तैयारी ही कहा जाएगा।

'वर्ल्डवार थ्री' नामक पुस्तक के लेखक श्री शेल्फोर्ड विंडवेल स्वयं भी दोनों विश्वयुद्धों में आर्टिलरी कमांडर की हैसियत से काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर चुके हैं। इसके बाद वे आयुध विज्ञान की एक पत्रिका के संपादक रहे। चिंतन स्तर के इस व्यक्ति ने अपनी पुस्तक में यह मंतव्य व्यक्त किया है कि परिस्थितियाँ ऐसी बन चुकी हैं कि तृतीय युद्ध १९८० व १९९० के मध्य निश्चित ही होकर रहेगा। परंतु यह धीरे-धीरे विकसित होने वाले वियतनाम जैसे युद्ध के रूप में नहीं, विस्फोटक रूप में उभरेगा। एक महाशक्ति के उकसाने पर अणु-आयुधों द्वारा यह युद्ध धरती, समुद्र व वायु तीनों जगह लड़ा जाएगा। मुख्य रणक्षेत्र पश्चिमी जर्मनी होगा क्योंकि वहाँ कम्युनिस्ट व अमेरिका परस्त राष्ट्रों की सेना के सत्तर प्रतिशत से अधिक घातक प्रक्षेपास्त्र केवल इसी आदेश की प्रतीक्षा में बैठे हैं कि कब वे अपने 'टारगेट' पर टूट पड़ें। यह ध्वसंलीला कितनी भयावह होगी, इसकी उन्होंने आधुनिक मिलिट्री स्ट्रेटेजी के कम्प्यूटराइज्ड आंकड़ों के आधार पर एक संतुलित रूपरेखा प्रस्तुत की है। उनके अनुसार यह युद्ध १९८५ से अधिक समय तक टाला नहीं जा सकता। अनेक समाचार पत्रों ने उनकी समीक्षा से सहमति व्यक्त करते हुए इसे एक भयानक कथानक लेकिन एक सुनिश्चित संभावना बताया है। उन्होंने लिखा है कि यह युद्ध सैनिकों के मध्य नहीं, अपितु अंतरिक्षीय उपग्रहों व जमीन से छोड़ी जाने वाली मिसाइलों तथा यंत्र चालित संयंत्रों के मध्य होगा। फिर भी क्षतिग्रस्त तो सारी मानव जाति एवं सभ्यता ही होगी। उपग्रहों से छोड़ी गई उच्च ऊर्जा मृत्यु किरण व्यक्ति को जिंदा भून देंगी व संपत्ति नष्ट कर देंगी। जितने ऐसे सुसज्जित उपग्रह अभी महाशक्तियों के पास हैं उनसे ऐसा लगता है कि पाँच अरब व्यक्तियों को मारना कोई कठिन काम नहीं।

एक वैज्ञानिक भविष्यवाणी स्टाकहोम के इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक फ्रैंक वार्नेबी ने की है जो स्वीडन की विज्ञान अकादमी की पत्रिका 'ऐमेवियो' में 'दृश्य विज्ञान' शोधमाला के अंतर्गत प्रकाशित हुई है। श्री बार्नेबी के अनुसार 'समस्त शांति प्रयासों के बावजूद विश्व की परम सत्ताएँ १५ जून १९८५ तक अपने आयुधों के परिसीमन प्रस्ताव पर असहमत ही बनी रहेंगी। परिस्थितियाँ जिस दिशा में अग्रसर हो रही हैं उसे देखते हुए लगता है कि अणु युद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके बाद टाला नहीं जा सकता। ११ बजे प्रातः अमेरिका और उसी समय (शाम को ६ बजे) रूस से आक्रमण प्रत्याक्रमणों का सिलसिला चल पड़ेगा। शुरूआत कौन करेगा कहा नहीं जा सकता, लेकिन यह सुनिश्चित है कि अपनी रक्षा में आक्रमण का जबाव देने वाला सारी शक्ति लगा देगा। यह युद्ध कुल मिलाकर २४ घंटे ही चलेगा। इसमें चौदह हजार सात सौ अणु प्रक्षेपास्त्र प्रयुक्त होंगे। ७५ करोड़ व्यक्ति तुरंत मारे जाएँगे और ३५ करोड़ गंभीर रूप से घायल होंगे। इस महायुद्ध की लेपट में यूरोप के ऐसे १४५ नगर आयेंगे जिनकी आबादी २ लाख से ऊपर है। पूरे युद्ध में ४१४० मेगाटन अणु ऊष्मा प्रयुक्त होगी जो सुदूर महाद्वीपों को वायुमंडल में छाये विकिरण प्रभाव से अपनी जकड़ में लेगी। विश्व के लगभग ८० प्रतिशत व्यक्ति इस युद्ध के कारण रोगग्रस्त हो शीघ्र मर जाएँगे या अणु ऊर्जा के शरीर पर दूरगामी प्रभावों के कारण कैंसर व अन्य महामारियों से हुई दुर्गति के फलस्वरूप जब तक जिएँगे कष्ट भरा जीवन जिएँगे।

श्री बानेर्बी ने यह भविष्यवाणी, आयुधों की संख्या, परिस्थितियाँ, महाशक्तियों के पारस्परिक तनाव जन्य वक्तव्यों को कम्प्यूटर में फीडकर पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर की है, वे कहते हैं कि यह संभावित युद्ध जो प्रभाव आयनोस्फियर में छोड़ेगा उसके फलस्वरूप सूर्य महीनों तक धुएँ के काले घने बादलों से ढका रहेगा। पर्यावरण पर रेडियोधर्मिता के दुष्प्रभाव से आबादी ही नहीं—वन क्षेत्रों तथा जीवजगत का भी सफाया हो जाएगा। भूमि कृषि योग्य न रहेगी। जो भी व्यक्ति उपलब्ध खाद्यान्न को खाएगा वह विकिरण के प्रभाव से ग्रस्त हो तुरंत काल को प्राप्त होगा। प्रस्तुत संभावना नई नहीं है। अमेरिका के हारवर्ड मेडिकल स्कूल के विकिरण विशेषज्ञ डॉ० हरबर्ट अब्राम्स ने प्रसिद्ध पत्रिका "न्यू इंग्लैंड जरनल आफ मेडिसन" में प्रकाशित अपने एक लेख को अमेरिकी सरकार की ३८ रिपोर्टों के आधार पर तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि न्यूक्लियर युद्ध होगा, जो अब से पाँच वर्षों के भीतर कभी भी हो सकता है, जिसमें कोई भी पक्ष विजेता नहीं हो सकता। युद्ध अवश्यंभावी है, क्योंकि इस सीमा तक अणु आयुध एकत्र हो गए हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युद्धोन्माद इस चरम सीमा तक पहुँच चुका है एवं पारस्परिक मतभेद इतने अधिक हैं कि कोई दैवी महाशक्ति ही इस स्थिति को अप्रत्याशित ढंग से रोक सकती है। युद्ध आरंभ होने पर अमेरिका पर प्रायः साढ़े छः हजार मेगाटन के बराबर शक्ति का आक्रमण होने की संभावना है जो १९४५ के हिरोशिमा के बम से प्रायः सवा पाँच लाख गुना अधिक शक्ति का होगा। सुरक्षा के प्रयत्नों के होते अमेरिका, यूरोप, जापान, रूस के लगभग अस्सी प्रतिशत व्यक्ति तुरंत या कुछ ही दिनों में तीव्र वेदना भोगते हुए अंतिम गति को प्राप्त हो जाएँगे।

अमेरिका के भूतपूर्व रक्षा मंत्री जार्ज मार्शल तथा हैराल्ड ब्राउन भी पिछले दिनों यह कहते रहे हैं कि 'महायुद्ध का आरंभ तो आकाश से होगा, किंतु उसका अंत धरातल पर धूलि मात्र शेष रहने के रूप में होगा। साथ ही साथ रूसी पत्रिकाओं, वक्तव्यों प्रतिवेदनों में बराबर यह चेतावनी दी जा रही है कि यदि अमरीका ने उत्तेजक कार्यवाही आरंभ की तो रूस अपनी व अपने साथियों की सुरक्षा के लिए शत्रु के व्यापक संहार का पूरा प्रयास करेगा।

क्या यह भयावह स्वरूप वास्तव में घटित होगा, क्या मानवता के वर्तमान स्वरूप का अंत इतना ही दुखद होगा ? इस संदर्भ में एक घटना ऐसी स्मरण की जा सकती है जो तीन वर्ष पूर्व एकाएक ही सबके रोंगटे खड़े कर गई थी।

७ जून १९८० को एक कम्प्यूटर से मिली गलत जानकारी के आधार पर बचाव और प्रत्याक्रमण वाले सारे संयंत्र अमरीकी सुरक्षासेना द्वारा सचेत कर दिए गए। सारे मिसाइल गंतव्य की ओर निशाने पर लगे थे। आणविक पनडुब्बियाँ अपनी कार्यवाही हेतु सचेत कर दी गईं। तीन स्थानों से प्राप्त सूचनाओं में थोड़ा अंतर होने के कारण सुप्रीम कमांडर ने तुरंत काउंटर चैकिंग किया। इस सब काम में मात्र तीन मिनट लगे। प्रक्षेपास्त्र छोड़ने भर की देर थी। अंतिम समय में यह पता चलने पर कि यह संयंत्र की खराबी से प्राप्त गलत सूचना है, परमाणु हमले की सारी कार्यवाही एकदम रोक दी गई। आदेश वापस ले लिए गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयुध विज्ञानी कहते हैं आज सारा यूरोप इंगलैंड से लेकर पोलैंड रूस की सीमा तक अति घातक दूर तक मार करने वाली मिसाइलों से भरा पड़ा है। एक संकेत भर मिलने की देर है। किसी भी समय फिर वैसी ही घटना की पुनरावृत्ति हो सकती है और सतत् तनाव के वातावरण में काम करने वाले उच्चस्तरीय वैज्ञानिक यदि गलती से कोई ऐसी शुरूआत कर ही दें तो फिर परिणति की कल्पना ही भर की जा सकती है।

आयुधों की रोकथाम तो दूर, बचाव हेतु भूमिगत शरणगाह बनाए जा रहे हैं। पिछले ही दिनों हालैण्ड में हुए ३०वें पुनर्वास सम्मेलन में इस हास्यास्पद कदम को व्यर्थ बताते हुए भाग लेने वाले चिकित्सा—वैज्ञानिकों ने कहा था कि ये शरणगाहें उस विकिरण ऊर्जा से सुरक्षा कैसे दिला सकेंगी जो वातावरण के रोम-रोम में संव्याप्त होगा। सड़ती लाशों, खतरनाक जीवाणु—विषाणुओं के कारण महामारी फैलने से कौन रोक पाएगा ? भावी प्रलय की संभवतः पूर्व तैयारी हेतु ही दोनों ही महाशक्तियों ने डाई-आक्सीन नापाम नामक रसायन आयुद्ध तथा विषाणु बम मिसाइलों का प्रयोग वियतनाम युद्ध से ही आरंभ कर दिया था। अभी भी एक भी घातक विषाणु कभी दुर्घटना वश बेकाबू हो जाए तो सारी मानवता को अपनी चपेट में ले सकता है।

आज के वैज्ञानिक तो कह ही रहे हैं लेकिन कुछ दृष्टा—मनीषियों के भविष्य कथन भी ऐसा ही संकेत देते हैं कि एक विश्व युद्ध इस सदी की समाप्ति से पूर्व ही संभावित है। इनमें नोस्ट्राडेमस (सोलहवीं शती) तथा अमेरिकन महिला आयरीन ह्यूजेज का नाम प्रमुख लिया जाता है। दोनों ने ही तृतीय विश्व युद्ध के जिन रोमांचकारी हृदय विदारक दृश्यों का वर्णन किया है वे वैज्ञानिक भविष्य कथनों से मेल खाते हैं। मिश्र के पिरामिडों पर लिखी पुस्तक 'द ग्रेट पिरामिड्स इट्स डिवाइन मेसेज' में भयानक आयुधों से बीसवीं सदी की समाप्ति के पूर्व ही घटित होने वाली एक विश्वव्यापी संहारलीला का वर्णन है। बाइबिल के ओल्ड व न्यूटन टेस्टामेंट ग्रंथों में भी आर्नेगेडान के रूप १९८५ से ८७ के मध्य एक महा संहारक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युद्ध का वर्णन है। महाभारत, हरिवंश पुराण, श्रीमद्भागवत में भी इसी अवधि में व्यापक परिवर्तन के संकेत हैं।

इन तेजी से बदलती परिस्थितियों के पीछे हर विचारशील को वस्तु स्थिति को समझना होगा। यह माहौल निश्चित् ही जटिल है, बताता है कि दुनियाँ विनाश के कगार पर आ बैठी है। लेकिन ध्वंस ही स्रष्टा का लक्ष्य होता तो वह इस दुनियाँ को रचता ही क्यों। विनाश का यह वातावरण विकृत मनःस्थिति की अदृश्य जगत से प्रतिक्रिया मात्र समझी जानी चाहिए। सोचा यह भी जाए कि संभव है सन्मति जागे और निराशा के वातावरण में भी आशा का सूरज चमक उठे। सन्मति ही प्रज्ञा है। प्रज्ञावतार को महाकाल या दैवी अनुशासन के रूप में जाना जा सकता है जो मनुष्य को सही मार्ग पर लाने के लिए प्रतारणा की भाषा में भी समझाता है—भयावह झाँकी भी दिखाता है। चिंतन की यह दुष्टता मिटे, इसके लिए जरूरी है कि चारों तरफ समझदारी का वातावरण बने। दैवी चेतना इन दिनों इसी कार्य में सक्रिय देखी जा सकती है। महायुद्ध की प्रस्तुत विभीषिका टाली जा सकती है। विनाश के प्रलय को रोका जा सकता है, पर यह तब ही संभव है जब मनुष्य परिस्थिति के अनुरूप अपना आचरण बदले। प्रज्ञावतार का विराट रूप इस सृष्टि को—मानवता को बचाएगा। इसमें किसी को किंचितमात्र भी संदेह नहीं होना चाहिए।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सृजन और ध्वंस एक ही सिक्के के दो पहलू

स्थूल बुद्धि और चर्म चक्षुओं की पकड़-परिधि बहुत सीमित है। यदि इन्हीं पर निर्भर रहा जाए तो किसी भी तथ्य को समझना और किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ़ना संभव न हो सकेगा। महत्त्वपूर्ण प्रसंगों में हमेशा सूक्ष्म बुद्धि एवं बेधक पारदर्शी दृष्टि का अवलंबन लेना होता है।

प्रकृति के प्रत्यक्ष स्वरूप को ही सब कुछ समझने वाले उसके पीछे छिपे परोक्ष रहस्यों को समझने में कहाँ सफल हो पाते हैं ? पृथ्वी धुरी पर भी घूमती है और द्रुतगति से सूर्य की परिक्रमा भी करती है। यह बात प्रत्यक्ष देखने का हठ करने वाले को समझाई ही नहीं जा सकती। ऐसे कई प्रकरण हैं जिन्हें समझने के लिए सूक्ष्म बुद्धि का आश्रय लेना पड़ता है। दुरहस्यों को समझने में समर्थ ऐसे ही व्यक्तियों को बुद्धिमान तत्त्वदर्शी आदि नामों से जाना और सराहा जाता है।

समय की विपन्नता उन्हें कदाचित ही दीख पड़े जिनकी दृष्टि कमाने, सोने और जागने तक सीमित हैं। उनके लिए तो जीवन चक्र का ढर्रा भी एकरस है जबकि मनुष्य बढ़ने, घटने और मृत्यु के मुख में घुसने के नियति चक्र में तेजी से घसीटा जा रहा होता है। इन दिनो अपने चारों ओर जो घटित हो रहा है, होने जा रहा है, उसका स्वरूप समझना—मूल्यांकन करना मोटी दृष्टि से संभव नहीं।

इन दिनों प्रकृति प्रकोपों का कुचक्र अधिकाधिक विपन्न होता चला जा रहा है। हजारों वर्षों से ऐसी दैवी विपत्ति धरती पर नहीं उतरी जितनी कि इन दिनों दृष्टिगोचर हो रही है। धरती और प्रकृति के बीच एक बहुत ही मधुर संतुलन अनादि काल से चला आ रहा है। वही मूल कारण है कि मौसम, जलवायु, वनस्पति एवं प्राणी जीवन का ऐसा पारस्परिक सौहार्द्र, भरा सुयोग बन पड़ा है जिसके आधार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर धरती को ब्रह्मांड के ग्रह-गोलकों की साम्राज्ञी का श्रेय मिला और स्रष्टा की अनुपम कलाकृति कहा गया। यदि यह संतुलन न बैठता तो चंद्रमा जैसी निस्तब्धता, कुरूपता और भयंकरता ही अपनी धरती पर बनी होती।

जिन्होंने अंतर्ग्रही परिस्थितियों व हलचलों का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है, उनका मत है कि विगत कुछ दशकों से पर्यावरण असंतुलन बढ़ता जा रहा है। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक प्रकार के व्यक्तिक्रम देखने में आ रहे हैं जो सीधे-सीधे अदृश्य जगत की परोक्ष विधि व्यवस्था में असंतुलन का संकेत देते हैं। खगोल विज्ञानियों तथा पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि यही स्थिति यथावत बनी रही तो आने वाले पंद्रह वर्षों में प्राकृतिक विपदाओं, विक्षोभों की भयावह विभीषिका प्रस्तुत हो सकती है। सारा संसार ही उसकी चपेट में आ सकता है तथा मानव जाति को त्रास भुगतते-भुगतते अपना अस्तित्व गँवाना पड़ सकता है।

जल प्रलय, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंपों, बाढ़, ज्वालामुखी विस्फोट, महामारियाँ, कॉस्मिक किरणों के कारण नए-नए रोग, बवंडर-तूफान आदि प्रकृतिगत विक्षोभ कहे जा सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण, न्यूक्लियर विस्फोट, अणु प्रक्षेपास्त्रों की अंतरिक्षीय होड़, बाँधों और उद्योगों का अंधाधुंध बिना किसी नीति-निर्धारण के बनते चले जाना—इन विक्षोभों के मानवकृत कारण कहे जा सकते हैं। पुच्छल तारे के प्रकट होने के दुष्परिणाम सौर कलंक व ज्वालाएँ, चंद्र व सूर्य ग्रहण, अंतर्ग्रही असंतुलन उल्कापात ये कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनमें प्रकृति को प्रधान कारण माना जा सकता है, लेकिन इन सबका समुच्चय जब एक साथ होने लगे तब इनका प्रभाव पृथ्वीवासियों पर कितना घातक होगा, इसकी मात्र कल्पना भर की जा सकती है।

मनुष्य के पुरुषार्थ और कौशल को कितना ही क्यों न सराहा जाए पर यह निश्चित है कि प्रकृति प्रकोप का एक झटका भी सहन नहीं कर सकता। जब भी जहाँ भी अतिवृष्टि, अनावृष्टि-भूकंप-तूफान महामारी आदि के प्रकृति विपर्यय सामने आते हैं तो मनुष्य चीं बोल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है और उसका सारा पराक्रम एक कौने पर रखा रह जाता है। सृष्टि के इतिहास में कई बार हिम प्रलय, अग्नि प्रलय जैसे भयावह समय आए हैं। उसने धरती का नक्शा ही बदल दिया। प्राणियों और वनस्पतियों की प्रजातियाँ ही बदल गई। कभी डायनासोर जैसे विशाल काय जंतु इस पृथ्वी पर वास करते थे, आज उनका नामोनिशान ही मिट गया है। सहस्त्राब्दियों की उलट पुलट के बाद जो बचा उससे कहीं ऐसी स्थिति बनी जिसे निर्वाह की दृष्टि से सरल साधारण कहा जा सके, जब भी ऐसे भयानक प्रलयंकर अवसर आते हैं तब मनुष्य को हजारों साल का प्रगति उपार्जन हाथ से गँवाना पड़ता है और जान बचाने का आश्रय तलाशने में यदि कुछ सफलता मिल सके तो उतने को ही सौभाग्य मानकर संतोष करना पड़ता है।

इन दिनों प्रकृति प्रकोपों का जो सिलसिला चल पड़ा है, वह कुछ समय से क्रमशः अधिक तीव्र और भयानक होता चला जा रहा है। पर्यवेक्षण से अनेक डरावने तथ्य सामने आते हैं और साथ ही सूक्ष्मदर्शियों द्वारा इस संदर्भ में जो अनुमान लगाए गए हैं, वे और भी अधिक चिंता उत्पन्न करते हैं।

हरीतिमा की चादर से लिपटी यह धरती धीरे-धीरे निर्वसन होती जा रही है। औद्योगीकरण ने पृथ्वी के सौंदर्य-सुषमा को छीनकर उसे कुरूप ही नहीं बना दिया वरन् वातावरण को इतना विषाक्त कर दिया है कि कभी भी ध्रुवों के पिघलने से जल प्रलय का संकट उठ खड़ा हो सकता है। वातावरण में बढ़ती कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा ने मनुष्य को शारीरिक व्याधियों, मानसिक तनाव के रूप में तथा समग्र प्रकृति चक्र को पर्यावरण असंतुलन, मौसम में अप्रत्याशित परिवर्तन के रूप में प्रभावित किया है। १९४८ में इस गैस का पर्यावरण में उत्सर्जन पाँच सौ पचास करोड़ टन था। लगभग चौवन प्रतिशत हरीतिमा का आवरण इसे सोख लेता था, शेष भूमिका समुद्र निभाता था। १९८२ में यह उत्सर्जन बढ़कर २१५० करोड़ टन हो गया एवं निर्वनीकरण से वन संपदा मात्र अठारह से इक्कीस प्रतिशत रह गई है। इस सदी में जहाँ पृथ्वी के कवच आयनीस्फियर का तापमान मात्र एक डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ा था—चार डिग्री बढ़ा है जिससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण बढ़ी ऊष्मा जीवधारियों के आस-पास ही कैद होकर रह गई है। इससे मौसम पर कैसे प्रतिकूल प्रभाव पड़े हैं, इसका मूल्यांकन समाचारों पर एक दृष्टि डालकर किया जा सकता है।

विश्वविख्यात 'प्लेन ट्रुथ' पत्रिका के अप्रेल ८३ अंक में एक पर्यवेक्षण छपा है जिसमें इस शताब्दी के मौसम परिवर्तनों पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि ऐसा प्रकृति प्रकोप पिछले हजारों वर्षों में देखने में नहीं आया। उसमें अदृश्य के गति चक्र का विश्लेषण करते हुए यह भी बताया है कि अगले दिनों यह संकट अधिक गहरा होने की संभावना है।

गत दो दशकों में हुए इन परिवर्तनों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार जाना जा सकता है।

१९६१ में पूर्वी अफ्रीका में भयंकर वर्षा हुई तथा उत्तरी भारत को सबसे कड़ी शीत ऋतु का सामना करना पड़ा। १९६२-६३ में २२० वर्ष बाद पहली बार इंगलैंड व उत्तरी यूरोप की सबसे ठंडी व लंबी शीत ऋतु का सामना करना पड़ा। इसी वर्ष १९६२ में उत्तरी भारत में मई का पूर्वार्ध अत्यन्त ठंडा व उत्तरार्ध अत्यधिक गर्म रहा। पहले मृत्यु शीत लहर से हुई एवं फिर लू के प्रकोप से।

जून १९६४ में दक्षिणी व दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका में पहली बार भयंकर हिमपात हुआ जबकि जुलाई १९६६ में अमेरिका ने पहली बार ऐसी लू का सामना किया जिसमें दस हजार से भी अधिक व्यक्ति मरे पाए गए। ऐसी स्थिति यहाँ पहले नहीं आई थी। १९६८ से १९७३ तक लगातार इथोपिया व चिली में भयावह सूखा पड़ा जिसमें पचास प्रतिशत व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। जबकि १९७३ के अगस्त में थार के रेगिस्तान में भयंकर बरसात व बाढ़ आई। जुलाई ७४ में बंबई की बाढ़ ने पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिए जबकि १९७५ में दस माह से भी अधिक लंबी भयंकर शीत ऋतु का सामना अलास्का पश्चिमी आस्ट्रेलिया, पूर्वी कनाडा को करना पड़ा। इसी वर्ष भारत ने भी शीतलहर का प्रकोप झेला जबकि अगस्त माह में इंग्लैंड, उत्तरी पश्चिमी यूरोप, डेनमार्क आदि देशों को १९७५ व १९७६ में लगातार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२ साल वैसी ही लू का सामना करना पड़ा जैसी मई माह में भारत के उत्तरी भारत बिहार आदि प्रदेशों में चलती है। १९७७ में आई लूंनी नदी की बाढ़ तथा लद्दाख की सारी पहाड़ी नदियों के आवेग भरे उफान ने सबको स्तंभित कर दिया। १९८०-८१ में मोरवी तथा पूरे राजस्थान के वारिस भरे अप्रत्याशित मौसम व प्रलय जैसी बाढ़ ने सारे मौसम विज्ञानियों को अचंभित कर दिया।

१९८२-८३ से अब तक के मौसम पर टिप्पणी करते हुए विद्वान लेखक डॉन टेलर ने लिखा है कि भूगर्भीय आणविक प्रयोग परीक्षण, प्रदूषण, संसाधन दोहन, जीवाष्म प्रज्वलन जैसे मानवी कृत्यों की परिणति इस डेढ़ वर्ष में ही बड़े विकराल रूप में देखने को मिली है। सन् ८२ में ही अमेरिका में ऐसा भयंकर हिमपात हुआ जितना कभी देखा सुना नहीं गया। आस्ट्रेलिया में इसके विपरीत शताब्दी का अभूतपूर्व सूखा पड़ा। इस देश को बाहर से माँग कर अपना गुजारा करना पड़ा, जबकि निजी उत्पादन का ४५ प्रतिशत यह निर्यात करता रहा है। टोंगा महाद्वीप भयंकर तूफान में पूर्णरूपेण ध्वस्त हो गया एवं चीन के सबसे बड़े प्रांत लाओनिंग में सूखा तथा सटे हुए शांघजींग प्रांत में बाढ़ के प्रकोप से अगणित व्यक्ति मारे गए। उत्तरी फ्रांस की रिकार्ड बर्फ, इटली में दिन में गर्मी तथा रात्रि को बर्फ, जापान की नागासाकी नदी में विनाशकारी बाढ़ एवं उत्तरी जापान में भूकंप, न्यूजीलैंड में सूखा तथा उत्तरी ध्रुव के समीपस्थ रूसी क्षेत्र में सर्दी के स्थान पर गर्म मौसम ऐसे परिवर्तन हैं जिनका वैज्ञानिकों के पास कोई जबाव नहीं है।

मार्च ८२ में मैक्सिको में एक भयंकर विषधूम्र वाला ज्वालामुखी फटा जिसकी बादल जैसी मोटी परत अभी भी आकाश में घूमती है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उसकी लालिमा सारे विश्व में महीनों तक देखी गई। भारत में आंध्र, देहली, उड़ीसा, सौराष्ट्र, राजस्थान आदि में प्रकृति-प्रकोप से जो दुर्घटनाएँ घटित हुईं उनसे सभी परिचित हैं।

यह भूतकाल का घटनाक्रम है। भविष्य में जो घटित होने की संभावना है उसकी भी प्रकृति पर्यवेक्षण तथ्यों समेत जानकारी सर्व साधारण को करा रहे हैं और समय रहते उनसे सचेत रहने तथा बचाव सोचने का मनोबल उत्पन्न कर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन्हीं दिनों पृथ्वी के निकट से एक धूम केतु गुजरा है जिसमें ऐसे विषैले तत्त्व पाए गए जैसे कि सामान्य धूमकेतुओं में से किसी में भी नहीं होते। हैली धूमकेतु की चर्चा तो सभी वैज्ञानिकों की जुवान पर है जो १९८५-८६ में प्रकट होगा। पहले भी सन् १५३१, १६०७, १६८७ में ऐसे ही धूमकेतु पृथ्वी के समीप आए हैं और उनके प्रभावों से पृथ्वी के अनेक खडों में युद्ध छिड़े तथा विनाशकारी विपत्तियों के दृश्य उपस्थित हुए। आगत में दृश्यमान हैली धूमकेतु सर्वाधिक लंबा होगा। उसकी पूँछ साढ़े आठ किलोमीटर लंबी है। पहले भी दोनों विश्व युद्धों के पूर्व एक-एक धूमकेतु पृथ्वी के बड़े समीप से गुजर चुके हैं। 'बिवेयर-हैली इज कमिंग' पुस्तक में वैज्ञानिकों की एक टीम ने उन आशंकाओं को व्यक्त किया है जो इस कारण धरती निवासियों को सहना पड़ सकती है। विशेषज्ञों ने इस पुस्तक में अनेकानेक तथ्यों का हवाला देते हुए बताया है कि यों तो पुच्छल तारे का पृथ्वी के समीप आना व टहलते-टहलते गुजर जाना एक सामान्य प्रक्रिया कही जा सकती है, लेकिन प्रस्तुत धूमकेतु जितना लंबा है व जितनी निकटता से वह पृथ्वी के वातावरण से निकलेगा, उससे अनेकानेक रोगों के पनपने महामारियाँ फैलने तथा कॉस्मिक किरणों की बौछार से बहुसंख्य जनता के प्रभावित होने की आशंका है। इसकी पूँछ से उत्सर्जित विषाक्त गैसें पृथ्वी के समीप आते ही इसके मलवे के सड़ने से वातावरण में भर जाती हैं। इससे नए-नए प्रतिरोधी विषाणु तैयार होते हैं, साथ ही मानसिक विक्षिप्तता, अपराधों, आत्महत्याओं के दौर पड़ने लगते हैं। विलियम हैली जिसके नाम पर इसे नाम दिया गया है, ने पता चलाया है कि यह पर्यवेक्षण गत ६ शताब्दियों में अवतरित धूमकेतुओं पर किया गया। हर बार पिछली घटनाओं की गंभीरतम पुनरावृत्ति हुई है।

सौर गतिविधियों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों का कथन है कि सूर्य का तापमान निरंतर कम होता जा रहा है, जिसका प्रभाव निश्चित ही धरती के वातावरण पर पड़ रहा है। सूर्य गत ४० वर्षों से निरंतर सिकुड़ रहा है एवं सूर्य कलंकों की संख्या बढ़ी व प्रकट होने की मध्यावधि कम हुई है। इसके प्रभावों के कारण धरती पर हिम युग की संभावना प्रबल होती जा रही है। अब तक चार हिम युग आ चुके हैं। अब वैज्ञानिकों के अनुसार पाँचवें हिम युग की तैयारी है। सर फ्रेड हायल ने तो इस संभावना के आगामी पंद्रह वर्षों में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साकार होने की संभावनाएँ बताई हैं। शीत लहरों के वर्तमान क्रम को वे इसकी पूर्व भूमिका बताते हैं।

वैज्ञानिक गण यह भी कहते हैं कि इन दिनों पृथ्वी के भूचुम्बकत्व में तेजी से कमी आई है। आशंका है कि यह घटोत्तरी जारी रही तो अगले दिनों स्थिति भयंकर होगी और महाविनाशकारी परिणाम होंगे।

प्रकृति मदमस्त हाथी की तरह जिस तरह विक्षुब्ध होती चली जा रही है, उसे मनुष्य को अनुशासन की विधि-व्यवस्था के रूप में समझना चाहिए। जब किसी बच्चे पर या अपराधी पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता तो दंड की नीति ही अपनानी पड़ती है। अंकुश की आवश्यकता इसी वर्ग को मर्यादा में रखने के लिए पड़ती है। प्रकृति अपनी पाठशाला में मनुष्य को अनुशासन का आद्याक्षर सिखाने हेतु जो उपक्रम अगले दिनों अपना सकती है उसके पूर्व संकेत अभी से मिल रहे हैं। ऐसे में विनाश से भयभीत होने के बजाय जन समुदाय को जाग्रत सृजन शिल्पी की भूमिका निभाने हेतु तत्पर हो जाना चाहिए।

कुंभकरण व रावण का आतंक प्रत्यक्ष सामने होते हुए भी रीछ-वानर दैवी चेतना के संरक्षण में लड़ने को तैयार हो गए थे। गोवर्धन को ऊँचा उठाने वाले छोटे-छोटे ग्वाले पहाड़ के दबने की संभावना से डरे नहीं-जमकर खड़े हो गए। साहस भर जिंदा हो जाए तो दैवी-चेतना अवतार प्रेरणा अपनी भूमिका स्वयमेव निभाती है। वातावरण परिशोधन हेतु जिस पुरुषार्थ युक्त एकात्मता की, अध्यात्म स्तर के सामूहिक प्रयोगों की आवश्यकता है, उसके लिए हर सोए को मूर्छना त्याग कर कमर कस कर खड़े हो जाना चाहिए। प्रज्ञावतार की प्रमुख भूमिका नव निर्माण की है विकास की संभावनाएँ एवं सृजन की तैयारी युगों-युगों से अवतार प्रक्रिया की यही कार्य पद्धति रही है। प्रस्तुत संभावनाओं को पलटना जिस साहस के बलबूते बन पड़ेगा उसे जुटाना, इस हेतु सुझाए गए उपक्रमों में उसे नियोजित करना ही आज का युग धर्म है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाकाल की प्रताड़ना भरी चेतावनी

यह युग संधि की बेला है। परिवर्तन की घड़ियाँ सदा जटिल होती हैं। एक शासन हटता दूसरा आता है तो उस मध्यकाल में कई प्रकार की उलट पुलट होती देखी गई है। गर्भस्थ बालक जब छोटी उदरदरी से बाहर निकल कर सुविस्तृत विश्व में प्रवेश करता है तो माता को प्रसव पीड़ा सहनी पड़ती है और बच्चा जीवन मरण से जूझने वाला पुरुषार्थ करता है। प्रभात काल से पूर्व की घड़ियों में तमिस्रा चरम सीमा तक पहुँचती है। दीपक के बुझते समय बाती का उछलना-फुदकना देखते ही बनता है। मरणासन्न की साँसें इतनी तेजी से चलती हैं मानो वह निरोग और बलिष्ठ बनने जा रहा है। चींटी के जब अंतिम दिन आते हैं तब उसके पर उगते हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि परिवर्तन की घड़ियाँ असाधारण उलट पुलट की होती हैं। उन दिनों अव्यवस्था फैलती, असुविधा होती और कई बार संकट विग्रहों की घटा भी घुमड़ती है। युग परिवर्तन की इस संधि वेला में भी ऐसा ही हो रहा है। असुरता जीवन मरण की लड़ाई लड़ रही है और देवत्व को उसे पदच्युत करके सिंहासनारूढ़ होने में अनेक झंझटों का सामना करना पड़ रहा है। भूतकाल में भी ऐसे अवसरों पर यही दृश्य उपस्थित हुए हैं, ऐसे ही घटनाक्रम चले हैं, जैसे कि इन दिनों सामने हैं।

परिवर्तन की प्रक्रिया चल तो बहुत समय से रही है, पर उसकी आरंभिक मंदगति को द्रुतगामी बनने का अवसर इन्हीं दिनों मिला है। प्रकृति जब रुग्ण शरीर से विषाक्तता को निकाल बाहर करने के लिए अधिक तत्परता बरतती है तो कई प्रकार के उपद्रव उठ खड़े होते हैं। उल्टी, दस्त, ज्वर आदि में रोगी को कष्ट तो अवश्य होता है, पर संचित मलों की सफाई इससे कम में हो भी नहीं सकती। रक्त में भरी विषाक्तता फोड़ा-फुंसी बनकर बाहर आती और मवाद बनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदा होती है। देखने में यह अरुचिकर लगता है पर चिकित्सक यही कहते हैं घबड़ाने की कोई बात नहीं। प्रकृति को अपना काम करने देना चाहिए। जो सफाई चिकित्सक मुद्दतों में नहीं कर सकते थे वह उस उभार में कुछ ही दिनों में संपन्न हो जाती है। विषमता के निष्क्रमण में ऐसा होता भी है। सेना भागते-भागते अपने क्षेत्र को नष्ट कर जाती है, ताकि शत्रु के हाथ में कोई सुविधा जनक परिस्थिति न लगे। लगता है सफाई के दिनों में ऐसी ही रणनीति चल रही है। लगता है नाली साफ करते समय उड़ने वाली बदबू की तरह इन दिनों जो असुखद घटित हो रहा है उसके पीछे सुखद संभावनाएँ ही झाँक रही हैं।

प्रसव पीड़ा में एक ओर प्रसूता को अत्यधिक कष्ट होता है, दूसरी ओर नवजात शिशु के आगमन की कल्पना से हृदय भी हुलसता है, यह परिवर्तन ऐसे ही विग्रह करता है, कन्या ससुराल जाती है तो परिवार का विछोह कम व्यथित नहीं करता, किंतु ससुराल में घर की रानी बनने का सपना उसे धैर्य बँधाता और आश्वासन भी देता है। परिवर्तन की इस वेला में आगत कष्टों को इसी रूप में देखा जाना चाहिए।

अदृश्य दर्शियों के भविष्य दर्शन इन दिनों को अधिक त्रास दायक बताते हैं। उनका कथन है कि सन् १९८० से २००० के मध्यवर्ती बीस वर्ष भारी उथल पुथल के हैं। उनमें एक ओर दुष्प्रवृत्तियों का कष्टकारक दंड व्यवस्था अपनी चरम सीमा पर होगी तो दूसरी ओर नवसृजन के आधार भी खड़े होंगे। इन परस्पर विरोधी गतिविधियों से असमंजस तो होता है पर साथ ही यह जानकर समाधान भी मिलता है कि ऐसे समयों पर इस स्तर की दुहरी गतिविधियों का चलना अस्वाभाविक नहीं है। किसान हल चलाकर खेत के खरपतवार और कंकड़ पत्थर हटाता है साथ ही बीज बोने की तैयारी भी करता है। इनमें से एक कार्य ध्वंसात्मक है दूसरा सृजनात्मक। दोनों के मध्य परस्पर विरोध देखा जा सकता है पर वस्तुतः वह पूरक भी तो होता है। डॉक्टर आपरेशन करने में जितनी कुशलता दिखाता है उतनी ही तत्परता घाव भरने के उपक्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में भी बरतता है। माता का दुलार और सुधार साथ-साथ चलता है। पतझड़ में पुरातन पत्र पल्लव सिरा झड़ते हैं, साथ ही बसंत की हरीतिमा का पूर्वाभास भी होता है।

दूरदर्शियों के अनेक वर्ग हैं और उन सबने अपने-अपने ढंग से इस संधि वेला को दुहरी संभावनाओं से भरा पूरा बताया है। वे निकट भविष्य में सुखद की संभावना बनाते हैं। अपने पक्ष के समर्थन में उनके दृष्टिकोण तो अलग-अलग हैं, पर निष्कर्ष एक ही तथ्य पर जा पहुँचते हैं। सभी की यह मान्यता है कि कष्टकारक दिन समीप हैं। ऐसे पूर्व कथन हानिकारक होते हैं और लाभदायक भी।

हानिकारक उनके लिए जो डरते घबराते और हड़बड़ी में चिंताग्रस्त, हतप्रभ और किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनते हैं। यह हड़बड़ी वास्तविक विपत्ति से अधिक हानिप्रद होती है। कहावत है कि जितने व्यक्ति मौत से मरते हैं, उससे अधिक मरणभय से असंतुलित होकर बेमौत मरते हैं।

लाभदायक उनके लिए जो अशुभ संभावनाओं का पूर्वाभास पाकर अपनी जागरूकता बढ़ाते हैं। सूझ-बूझ से काम लेते और धैर्य, साहस को निखारते हैं। ऐसे पराक्रमी अपने कौशल को निखारने में इन संकट की घड़ियों को दैवी वरदान की तरह सहायक मानते हैं। विपत्तियों से जूझने के सत्परिणामों की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसका विस्तृत विवरण मोर्चे पर लड़ने वाले योद्धा, संयम की साधना करने वाले तपस्वी, संघर्षों से जूझकर महामानव बनने वाले परमार्थ परायण लोक सेवक ही भली प्रकार बता सकते हैं। वे एक स्वर से यही कहते पाए जाएँगे कि परीक्षा की घड़ी कठिन तो अवश्य थी, पर तपने और कसने के उपरान्त खरा-खोटा कहलाने का जो श्रेय मिल सका उस कष्ट साध्य प्रक्रिया में होकर गुजरे बिना और किसी तरह उपलब्ध नहीं हो सकता था। संभव है विश्व मानव को इसी प्रकार से भट्ठी में गलाया और नए साँचे से ढाला जा रहा हो।

इन दिनों अशुभ संभावनाओं के संबंध में खगोल विज्ञानी कहते हैं कि सूर्य पर इन्हीं दिनों भारी विस्फोट कलक-उभरते जा रहे हैं। उनकी ज्वालायें लाखों मील ऊँची लपकेंगी और असाधारण ऊर्जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतरिक्ष में फेंकेंगी। इसका प्रभाव पृथ्वी के पदार्थों और प्राणियों पर बुरा पड़ेगा। यह विघातक प्रक्रिया कई वर्षों तक चलती रहेगी। अंतरिक्ष विज्ञानी अंतर्ग्रही परिस्थितियों के कारण धरती के वातावरण में तापमान बढ़ने और उससे संचित हिम भंडार गलने की बात कहते हैं। उससे जल प्रलय जैसी घटनाएँ घटित हो सकती हैं। भूगोल का पर्यवेक्षण करने वाले बताते हैं कि यंत्रों से बढ़ते वायु प्रदूषण से अगले दिनों घुटन पैदा होगी। बढ़ता हुआ कोलाहल विक्षिप्तता उत्पन्न करेगा। अणु विस्फोटों से उत्पन्न विषाक्त विकिरण से जीवनी शक्ति का भयानक ह्रास होगा। भूगर्भवेत्ता बताते हैं कि पेयजल, ईंधन तथा खनिज संपदा का जिस गति से दोहन और ह्रास हो रहा है, उसे देखते हुए इन साधनों से धरती के दिवालिया हो जाने का खतरा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का पर्यवेक्षक है—भय, लोभ और अविश्वास के तत्त्व शासनाध्यक्षों के मन में बुरी तरह घुस रहे हैं। फलतः तीसरे महायुद्ध की संभावना बढ़ रही है। अणु आयुधों के बारूद में एक चिनगारी पड़ने की देर है कि विस्फोट से धरती की स्थिति विषाक्त बादलों से भर जाएगी। फलतः प्राणियों का अस्तित्व इस रूप में नहीं बच सकेगा, जैसा आज है।

नृतत्व विज्ञानी कहते हैं कि बढ़ती हुई जनसंख्या अपने समय की सबसे बड़ी समस्या है। कुछ दिनों में अनियंत्रित प्रजनन पर भूख, प्यास, युद्ध और महामारी की गाज गिरेगी और फलतः यह अवांछनीय प्रजनन स्वयं तो मरेगा ही धरती की परिस्थितियों को भी इस योग्य न रहने देगा जिसमें बचे खुचे लोगों को निर्वाह मिल सके।

समाजवेत्ता कहते हैं कि स्वार्थपरता, संग्रह, विलास और उपभोग की लिप्सा पारस्परिक स्नेह सहयोग की उन परंपराओं को नष्ट कर देगी जिसके आधार पर मानवी विकास संभव हुआ है। अनुशासन की अवहेलना, उच्छृंखलता में गर्व, अपराधों पर अनियंत्रण की स्थिति जिस क्रम से बढ़ रही है उससे समाज संस्था में आदर्श नाम की कोई चीज बच नहीं पाएगी। लोग भूखे भेड़ियों की तरह एक दूसरे पर घात-प्रतिघात लगाते और यादवी आत्मघात के शिकार बनते पाए जाएँगे। ये सभी संभावनाएँ उन मूर्धन्य लोगों ने व्यक्त की हैं जिनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्कर्ष तथ्यपूर्ण और प्रामाणिक माने जाते हैं। इन समस्याओं के रहते भविष्य अंधकारमय लगता है। जिनके हाथ में संसार के भाग्य निर्धारण की शक्ति है वे पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में रह रहे हैं और ऐसा कुछ कर नहीं पा रहे हैं कि विनाश के प्रवाह को रोकने और विकास के ठोस आधार खड़े करने में सफल हो सकें। वे भी चिंतित और निराश दीखते हैं। दो हाथ जोड़ने का प्रयत्न करने पर रस्सी चार हाथ अन्यत्र से टूटने लगे तो प्रयत्नकर्त्ताओं को भी हार मानते देखा जाता है।

संसार में ऐसे अतीन्द्रित क्षमता संपन्न भविष्यवक्ता भी यदा-कदा देखने सुनने में आते हैं जिनके कथन सुनिश्चित माने जाते हैं। जो कथन अब तक सही सिद्ध हो चुके वे यही बताते हैं कि इनके द्वारा कही गई बातें भविष्य में भी सच हो सकती हैं। इस स्तर के सूक्ष्मदर्शियों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य को कष्टकारक माना गया है। मनुष्यकृत उपद्रवों के अतिरिक्त दैवी प्रकोपों की संभावना व्यक्त की गई है।

अध्यात्मवेत्ता कहते हैं कि समस्त मनुष्य समाज एक शरीर की तरह है और उसके घटकों को सुख-दुख में सहयोगी रहना पड़ता है। एक नाव में बैठने वाले साथ-साथ डूबते और पार होते हैं। मानवी चिंतन और चरित्र यदि निकृष्टता के प्रवाह में बहेगा तो उनकी अवांछनीय प्रतिक्रिया सूक्ष्म जगत में विषाक्त विक्षोभ पैदा करेगी और प्राकृतिक विपत्तियों के रूप में प्रकृति प्रताड़ना बरसेगी। चित्र विचित्र स्तर के दैवी प्रकोप संकटों और त्रासों से जन-जीवन को अस्त-व्यस्त करके रख देंगे। हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि अपनी सज्जनता तक ही सीमित न रहे, वरन् आगे बढ़कर संपर्क क्षेत्र की अवाँछनीयता से जूझे। जो इस समूह धर्म की अवहेलना करता है वह भी विश्व-व्यवस्था की अदालत में अपराधी माना जाता है। सामूहिक कर दंड की तरह निर्दोषी समझे जाने वालों को भी त्रास सहना पड़ता है। गेहूँ के साथ घुन पिसता है—"सूखे के साथ गीला जलता है"—जैसी उक्तियाँ इस अर्थ में सच हैं कि सामूहिक उत्तरदायित्वों की अवहेलना व्यापक विपत्तियों का निश्चित कारण बनती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूर्य का पृथ्वी से सीधा संबंध है और इसी का प्रभाव विशेष रूप से धरती के वातावरण को प्रभावित करता है। पर इस बार बृहस्पति ग्रह में भी विलक्षण प्रकार की उत्तेजनाएँ उत्पन्न हो रही हैं और उनका सीधा प्रभाव अपनी धरती पर भी पहुँचने की संभावना है। सूर्य-स्पॉट और वृहस्पति के विकिरण का प्रभाव कोढ़ में खाज की तरह दुहरी विपत्ति का निमित्त बन सकता है।

ऐसे ही अनेक कारणों को दृष्टि में रखते हुए सूक्ष्म दर्शियों ने सन् ८० से २००० के मध्यवर्ती २० वर्षों को अव्यवस्था, विक्षोभ और विपत्ति से भरे पूरे बताया है। इन प्रतिपादनों की एक संगति यह भी बैठती है कि युग परिवर्तन की संधि वेला आ गई। उसमें ऐसी उलट-पुलट होनी स्वाभाविक है। असुरता अपना स्थान छोड़ते-छोड़ते अपनी जीवन मरण की लडाई लडेगी। देवत्व को भी इन्हीं दिनों सत्तारूढ़ होना है। इसलिए प्राचीन काल के देवासुर संग्राम की तरह इन दिनों भी व्यापक विग्रह दृष्टिगोचर होंगे और उससे सामान्य जन-जीवन में अस्त-व्यस्तता उत्पन्न हो तो उसे अप्रत्याशित नहीं माना जाना चाहिए।

इस विषम वेला में विपत्तियों का निराकरण और असंतुलन का समापन बड़ा काम है। इस दुहरी प्रक्रिया का उत्तरदायित्व सृष्टा ही सँभाल सकता है। समय-समय पर प्रस्तुत होते रहने वाले असंतुलनों को सँभालने के लिए उस आद्य शक्ति को स्वयं अवतरित होना पड़ा है जिसने समस्त ब्रह्मांड में इस अद्भुत विश्व उद्यान की संरचना की है और उसे सर्वत्र सुंदर बनाने में अपनी कलाकारिता दाँव पर लगा दी है। मनुष्य समीप है, वह सीमित क्षेत्र में—सीमित मात्रा में सीमित उत्तरदायित्व वहन कर सकता है। व्यापक समस्याओं के समाधान में सृष्टा को बागडोर सँभालनी पड़ती है। इसके सुनिश्चित आश्वासन, गीता के पृष्ठों में यदा-यदा हि धर्मस्य ...'' के रूप में अंकित हैं। इस बार भी अधर्म के उन्मूलन और धर्म के संस्थापन की भूमिका उसी को निभानी है।

भगवान निराकार हैं। उनका कृर्तृत्व चेतना क्षेत्र में उभरता है और वह प्राणियों में दृष्टिगोचर होता है। हलचलें पदार्थ में होती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्म शरीर करता है और ज्ञान का उदय अंतराल में होता है। अंतराल ब्रह्मक्षेत्र है। पुरुषार्थ कर्मक्षेत्र। भगवान क्षेत्राधिपति हैं, इसलिए वे चेतना को झकझोरते हैं। इससे उत्पन्न उभार ही कार्यरत होता है और पुरुषार्थ के रूप में उसका परिचय मिलता है। प्रज्ञावतार की प्रेरणाएँ देव मानवों का अंतराल उछालेंगी और उसके अनुशासन में चलने वालों के मन को उत्कृष्ट चिंतन तथा शरीर को श्रेष्ठ आचरण के लिए विवश होना पड़ेगा। भूतकाल में भी यही होता रहा है। यही अब भी होना है। भगवान अपनी अवतरण लीलाएँ देवमानवों के द्वारा संपन्न करेंगे। इस युग संधि में व्यापक परिवर्तन की जो महान प्रक्रियाएँ संपन्न होने जा रही हैं, उनमें भगवान और उनके भक्तों की सम्मिलित भूमिका होगी। राम ने, कृष्ण ने अकेले ही अधर्म उन्मूलन का प्रयोजन पूरा नहीं किया था। उनका हाथ बँटाने में, कितने ही देव मानव सहभागी बने थे। हर अवतार का लीला संदोह इसी प्रकार का रहा है। प्रज्ञावतार की कार्य पद्धति भी उस पूर्व परंपरा के अनुरूप ही रहेगी।

देव मानवों का अवतरण समयानुसार हो चुका। वे अब इतने समर्थ हो गए कि अपने जीवनोद्देश्य युग अवतार के सहभागी बनने की भूमिका को निभा सकें। अरुणोदय की प्रथम किरणें पर्वत शिखर पर चमकती हैं। उसके बाद उसका आलोक नीचे उतरता और ऊर्जा का व्यापक वितरण करता है। जाग्रत आत्माएँ देवमानवों के रूप में अपनी विशिष्टता का इन्हीं दिनों परिचय देंगी और महाकाल के संकेतों पर अपनी रीति-नीति निर्धारित करेंगी। विनाश की संभावनाओं से जूझने और भविष्य का निर्माण निर्धारण करने का बहुमुखी कार्यक्रम सामने है। प्रज्ञा परिजनों का अपने हिस्से का उत्तरदायित्व अंतःप्रेरणा से प्रेरित होकर स्वयं ही अपने कंधे पर वहन करना है। उसी में उनके वर्चस्व की सार्थकता है।

❒ ❒

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आसार बताते हैं कि संकट और बढ़ेंगे

समाजशास्त्रियों और इतिहासकारों के अनुसार ईसा के समय विश्व की कुल जनसंख्या ३० करोड़ थी, अब तो अकेले भारत की ही आबादी इतनी है कि यह ईसा के समय की आबादी से तिगुनी हो जाती है, ईसा के १७५० वर्ष बाद जनसंख्या लगभग ढाई गुनी अर्थात् ७५ करोड़ हुई। इसके बाद से अब तक चक्रवृद्धि गणित के क्रम से जनसंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। सन् १८८० में आबादी ११० करोड़ हुई, १९०० में १६० करोड़, १९२० में १८१ करोड़ ६१ लाख, १९४० में .२४ करोड़, १९६० में ३०६ करोड़ और १९८० में ४१२ करोड़ हो चुकी थी अब ६ अरब के निकट पहुँचने वाली है ?

कहा जा चुका है कि पृथ्वी के पास सीमित प्राणियों के लिए ही स्थान और साधन उपलब्ध है। अन्य प्राणियों की तरह यह नियम मनुष्यों पर भी लागू होता है। मनुष्येतर प्राणियों के संबंध में देखा गया है कि जब उनकी संख्या बढ़ने लगती है और सीमा रेखा को लाँघ जाती है तो प्रकृति उनका सफाया करने लगती है। यह स्वाभाविक भी है। प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले सुविधा साधन संख्या में प्राणियों के लिए कम पड़ने लगते हैं। कम साधन और अधिक उपभोक्ताओं के कारण निश्चित ही संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शक्तिशाली दुर्बल को दबाता है और उसके हिस्से का भाग छीनता है। इस प्रकार के संघर्ष में जो सशक्त होते हैं, वही बचते हैं और दुर्बल मारे जाते हैं, संघर्ष की यह स्थिति अंततः पूरे के पूरे वर्ग को ही नष्ट करके रख देती है। नृतत्व शास्त्रियों को प्राचीनकाल में विद्यमान रहे, ऐसे कई प्राणियों के अवशेष मिले हैं, जो उन दिनों काफी शक्तिशाली विशालकाय थे, किंतु उनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि प्रकृति के पास उपलब्ध साधन स्रोत कम पडने लगे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई और फलतः वह पूरा का पूरा प्राणी वर्ग ही अपना अस्तित्व नष्ट कर बैठा।

क्या मनुष्य के लिए भी प्रकृति यही न्याय नीति बरतने वाली है ? उसके विधान में किसी से भी पक्षपात करने या किसी को भी छूट देने की गुंजाइश नहीं है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि मनुष्य के लिए संघर्ष और अंततः विनाश का चक्र घूमने को तैयार बैठा है। इस आधार पर संसार भर के विचारशील और बुद्धिजीवी व्यक्ति लोगों को तरह-तरह से सीमित संतानोत्पादन के लिए समझाते, बड़े परिवारों की हानियाँ और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों की विवेचना करते रहे हैं। इन बातों का कोई प्रभावशाली परिणाम उत्पन्न हुआ हो ऐसा देखने में नहीं आता, आखिर प्रकृति को ही अपना कुल्हाड़ा तेज करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है।

इन दिनों संसार में हिंसा की आग बडी तेजी से फैल रही है। हत्या-मारपीट, उपद्रव, दंगे, लूटमार और अपराधों में बड़ी तेजी से बाढ़ आ रही है। मनोवैज्ञानिकों और प्रकृति विज्ञानियों की दृष्टि में इसका एक बड़ा कारण जनसंख्या का बहुत अधिक बढ़ जाना है, पिछले दिनों ब्रिटेन के दो प्रसिद्ध समाजशास्त्री क्लेअर रसेल और डब्ल्यू० एस० रसेल ने कई मामलों का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त किए, उनसे यही सिद्ध होता है कि इस तरह की घटनाओं के मूल में वस्तुतः प्रकृति प्रेरणा ही काम कर रही है। इन दिनों छुट-पुट कारणों से उत्पन्न हुए मन मुटाव भी भयंकर हिंसावृत्ति के रूप में उभरते हैं और उनकी चपेट में प्रतिद्वन्द्वियों के निरीह बाल बच्चे भी आ जाते हैं। धन के लालच में चोरी, ठगी की अपेक्षा सफाया करके निश्चिन्तता पूर्वक लाभान्वित होने की आपराधिक प्रवृत्तियाँ पिछले दिनों तेजी से बढ़ी हैं। क्यों हिंसावृत्ति इतनी उग्र होती जा रही है ? इस पर विभिन्न दृष्टियों से विचार और कई परीक्षण करने के बाद यही सिद्ध हुआ कि जनसंख्या का दबाव मनुष्य को उथला, असहिष्णु और असंतुलित बना देता है, इसी प्रकार लोग जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं अथवा हत्या और हिंसा करने में जरा भी नहीं झिझकते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या के बढ़ने का मनोवैज्ञानिक प्रभाव जाँचने के लिए किये गए प्रयोगों में देखा गया कि छोटे-छोटे जानवर जब छिरछिरे, खुले और शांत वातावरण में रहते थे, तब उनकी प्रकृति बहुत शांत थी किंतु जब उन्हें भी भीड़ में रखा गया तो वे उत्तेजित और थके माँदे रहने लगे तथा उनमें एक दूसरे पर आक्रमण करने की प्रवृत्ति भी पनपती देखी गई। सर्वविदित है कि भीड़-भाड़ के कारण मल-मूत्र, पसीना तथा रद्दी चीजों की गंदगी भी बढ़ती है और शरीर से निकलने वाली ऊष्मा अपने निकटवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है, मनःशास्त्रियों के अनुसार यह विकृतियाँ ही प्राणियों तथा मनुष्यों को उत्तेजित करती एवं उन्हें अशांत बनाती है। यही कारण है कि छोटे गाँवों की अपेक्षा कस्बों और शहरों में अधिक अपराध होते हैं।

शहरों में आबादी बढ़ रही है और परिवारों में संतान की संख्या, कुल मिलाकर जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ एक दूसरा खतरा भी मनुष्य जाति के सिर पर मँडरा रहा है, वह है औद्योगीकरण के कारण स्वच्छ जल और शुद्ध वायु का दिनोंदिन दुर्लभ होते जाना। इन दिनों नए-नए उद्योग धन्धे, नए-नए कल कारखाने खुलते जा रहे हैं। इन कारखानों और फैक्ट्रियों के लिए बड़ी मात्रा में पानी भी चाहिए और वह पानी उपलब्ध जलस्त्रोतों से ही प्राप्त किया जाता है। बात यहीं तक सीमित रहती तो भी गनीमत थी, समस्या तो तब और विकराल रूप धारण करती है जब कल कारखानों से निकलने वाला कूड़ा कबाड़ा जलस्त्रोतों में फेंकी गई उन गंदगियों के कारण जलस्त्रोत दूषित हो जाते हैं। यों पृथ्वी पर पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है पर अधिकांश जलस्त्रोत इतने दूषित हो गए हैं कि पीने के पानी का एक तरह से अकाल ही पड़ता जा रहा है। पृथ्वी का ७९ प्रतिशत हिस्सा समुद्र से ढँका हुआ है। समुद्र का वह पानी न तो पीने योग्य होता है और न ही कल कारखानों या कृषि उद्योगों के ही उपयुक्त है। दो प्रतिशत जल बर्फ के रूप में उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों तथा ऊँचे पर्वतों की चोटियों पर जमा रहता है। एक प्रतिशत जल ही ऐसा होता है जो खेती, जंगल, उद्योग धंधों तथा पीने के काम में लाया जा सकता है। उसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी काफी पानी बेकार चला जाता है, जितना पानी बचता है उसका सातवाँ भाग नदियों, समुद्रों में फेंक देती है। अब जो पानी बचता है उसी में कल-कारखानों, खेती, बागवानी और पीने की, पकाने की आवश्यकता पूरी करनी पड़ती है।

कल कारखानों और फैक्ट्रियों की बाढ़ पेयजल का एक बहुत बड़ा भाग झपट लेती है। इतना ही नहीं उत्सर्जित गंदगी से आस-पास के जल स्रोतों को भी दूषित कर देती है। कल कारखानों के कारण मनुष्य को अपने भाग में से कितनी कटौती करनी पड़ती है इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि महानगरों में रहने वाले लोगों को अपनी आवश्यकता का केवल ४० प्रतिशत ही स्वच्छ जल मिल पाता है। इसी में उन्हें खींचतान कर काम चलाना पड़ता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वच्छ जल का कितना बड़ा भाग कारखाने और फैक्टरियाँ झटक लेते हैं ? यह कल्पना करने के लिए इन तथ्यों से अनुमान लगाना चाहिए कि एक लीटर पैट्रोल बनाने के लिए १० लीटर पानी फूँकना पड़ता है। १ किलो सब्जी पर ४० लीटर, १ किलो कागज के लिए १०० लीटर तथा १ टन सीमेंट के लिए ३५०० लीटर पानी जलाना पड़ता है। इतना होने के बाद कारखाने जो जहर फेंकते हैं वह भी उपलब्ध पानी का एक बहुत बड़ा हिस्सा नष्ट कर डालते हैं, क्योंकि उसे भी नदी तालाबों में ही फेंका जाता है। इसके कारण उन नदी तालाबों का पानी किसी काम का नहीं रह जाता, वह इतना विषाक्त हो जाता है कि न केवल झील तालाबों की सुन्दरता नष्ट हो जाती है, वरन् उनमें रहने वाले जीवजंतु और उनका प्रयोग करने वाले सभी अपना स्वास्थ्य नष्ट करने के लिए विवश हो जाते हैं। इन दिनों अमेरिका के कई झील झरने जो कभी अपनी सुंदरता के कारण प्रकृति प्रेमियों का जी ललचाते थे और लोग उनके किनारे बैठकर अपना थोड़ा बहुत समय शांति से बिताया करते थे, वे अपना आकर्षण खो बैठे हैं। प्रशासन ने अब कई झील, झरनों और नदी जलाशयों के किनारे पर बड़े-बड़े सूचनापट लगा दिए हैं, जिन पर लिखा है, "डेंजर, पोल्यूटेड वाटर, नो स्विमिंग" (खबरदार पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहरीला है तैरिये मत। वहाँ के औद्योगिक नगरों के निकटवर्ती सरोवर अब एक प्रकार से 'मृतक जलाशय' बन चुके हैं। नदियाँ अब गंदगी बहाने वाली गटरें मात्र रह गईं।

यह कैसे हुआ ? मात्र एक ही कारण है कि कारखानों में जो कुछ वैस्टेज कूड़ा कबाड़ा निकलता है वह इन नदी तालाबों में फेंक दिया जाता है। विशेषज्ञों का कथन है कि इस प्रकार जो प्रदूषण फैल रहा है उसके कारण अगले दिनों पेय जल का गंभीर संकट उत्पन्न होगा। प्रसिद्ध रसायन विशेषज्ञ नाटवल्ड डफितराइट ने नार्वे की सेंट फ्लेयर झील से पकड़ी गई मछलियों का रासायनिक विश्लेषण किया तो पाया कि उनमें पारे की खतरनाक मात्रा मौजूद है। मछलियों में पारे का अंश कहाँ से आया ? अधिक बारीकी से पता लगाया तो मालूम हुआ कि उस झील के किनारे लगे हुए कारखानों से जो औद्योगिक रसायन फेंका जाता है, उसमें पारे की भी बड़ी मात्रा होती है और वह गंदगी के रूप में बहती हुई झीलों में पहुँचती है। सोचा गया था कि यह पारा भारी होने के कारण जल की तली में बैठ जाएगा। कुछ मछलियाँ यदि पारे से मर भी गईं तो कुछ विशेष हानि नहीं होगी। पर यह अनुमान गलत निकला और मछलियाँ पारे की प्रतिक्रिया से प्रभावित हुईं तथा यह प्रभाव उनके शरीर में इकाई बनकर जम गया। उल्लेखनीय है कि इन मछलियों का भोजन के रूप में उपयोग करने के कारण कई मनुष्य अंधे और पागल हो गए तथा सैकड़ों की तो मृत्यु हो गई।

फिलहाल तो ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेलजियम, अमेरिका जैसे उन्नत देशों में ही स्थिति विषम से विषमतर होती जा रही है, किंतु शीघ्र ही धुँए के जहरीले प्रभाव से सारा संसार संकट में पड़ने वाला है। रोम की राष्ट्रीय अनुसंधान समिति के निर्देशक रावर्टो पैसिनों ने वायु प्रदूषण के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों की ओर संकेत करते हुए कहा है कि इससे जीवन संकट की समस्या निकट भविष्य में ही खड़ी होने जा रही है। भले अभी कुछेक उन्नत देश ही इससे प्रभावित होते दिखाई दे रहे हों, किंतु शीघ्र ही संसार भर के देश कम ज्यादा रूप में इन संकटों से प्रभावित होंगे। उद्योग धंधों और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कल कारखानों के कारण वायु में घुलते जा रहे विषों के प्रभाव से यह आंशका भी व्यक्त की जा रही है कि संभवतः इन विषैले तत्त्वों के कारण सारी पृथ्वी ही भयंकर रूप से गर्म होकर जल जाए अथवा उस पर रहने वाले प्राणी धुँए के कारण घुटघुट कर मरने लगें।

इस दुःखद और दुर्भाग्य पूर्ण संभावना का वैज्ञानिक आधार बताते हुए वैज्ञानिक कहते हैं कि कारखानों की भट्टियों और रेल, मोटरों से निकलने वाला धुँआ आकाश में जाने लगता है तथा अवसर पाते ही धरती की ओर झुकने लगता है। यह झुकाव कभी भी इतना घना हो सकता है कि कभी भी कहीं भी कोई भी दुर्घटना घट सकती है और हजारों लोगों को अपनी चपेट में मृत्यु की गोदी में फेंक सकती है। थर्मल इन्वर्शन ताप व्यतिक्रमण की प्रक्रिया शुरू होते ही धुँआ धुँध के रूप में बरसने लगता है। जब तक वायु गर्मी से प्रभावित रहती है, तब तक तो धुँआ धुँध हवा के साथ ऊपर उठता रहता है, लेकिन जब शीतलता के कारण वायु नम हो जाती है तो धूल का उठाव रुक जाता है और वह नीचे की ओर गिरने लगती है। हवा का बहाव बंद हो जाने पर तो यह विपत्ति और भी बढ़ सकती है। पिछले दिनों कई देशों में पाँच-पाँच सात दिन तक इस तरह के विषैले धुएँ की धुंध छाई रही और इस धुंध के दौरान ही सैकड़ों लोगों को घुट-घुट कर बुरी तरह खाँसते-खाँसते अपने प्राण गँवाने पड़े। इस तरह की घटनाएँ अगले दिनों यत्र-तत्र घटेंगी।

हजारों लोगों को एक साथ मार डालने वाली घटनाओं का ताँता न भी लगे, तो भी कल कारखाने और रेल, मोटरें जिस तेजी से वायुमंडल को विषाक्त करते जा रहे हैं उनके कारण नए-नए रोगों के उत्पन्न होने की संभावना निश्चित ही समझनी चाहिए। वायु प्रदूषण के भयंकर खतरों की ओर वैज्ञानिक समय-समय पर ध्यान आकर्षित करते हैं। हाल ही ब्रिटेन की पर्यावरण व प्रदूषण शोध-संस्था के वैज्ञानिकों ने यह वक्तव्य प्रसारित किया है कि "पिछले दिनों धुँए के रूप में जितना विष वायुमंडल में छोड़ा गया है और अब भी छोड़ा जा रहा है। यदि शीघ्र ही कोई नियंत्रण नहीं किया गया तो बहुत जल्द ही ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाने वाली है जिसमें विश्व के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकांश जीवों का, जिसमें मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य प्राणी भी आते हैं, सबको दम-घुट-घुट कर मर जाना पड़ेगा।"

भावी युद्ध के लिए अणु आयुधों का निर्माण भारी मात्रा में हो रहा है। उनके परीक्षण विस्फोटों से जितना विकिरण अंतरिक्ष में भर चुका है उसके फलस्वरूप अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों का शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है और इससे नई पीढ़ियों को विकलांग, विक्षिप्त एवं अविकसित स्तर का जीवन-यापन करना पड़ेगा। यह विस्फोटों का सिलसिला अभी चल ही रहा है और उससे सर्वनाश का खतरा दिन-दिन बढ़ रहा है। अणु युद्ध हुआ तब तो समझना चाहिए कि महा प्रलय जैसी स्थिति ही उत्पन्न होगी और इस धरती का वातावरण मनुष्य ही नहीं, किसी अन्य प्राणी के जीवित रहने योग्य न रहेगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कुछ विपत्तियाँ ऐसी होती हैं जो शस्त्र प्रहार की तरह तत्काल प्राण संकट उत्पन्न करती हैं। कुछ क्षय रोग की तरह अविज्ञात रहती और धीरे-धीरे गलाती, घुलाती एवं मरण के मुख में धकेलती हैं। जनसंख्या वृद्धि, वायु प्रदूषण, अणु विकिरण, कोलाहल, रासायनिक विषाक्तता, नशे जैसे संकट होते हैं जो गलाकर समस्त मानव समाज को विनाश के गर्त में धकेलते जा रहे हैं।

स्थिति बदलती है, संकट बढ़ते चले जा रहे हैं। इनसे जूझना या मरण के सम्मुख झुकना यही दो मार्ग सामने हैं। अच्छा यही है कि विनाश से मुठभेड़ करने की तैयारी की जाए। इसी में अपना बचाव है, और इसी में समस्त मानव का संरक्षण।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नव सृजन का आश्वासन आशा की ज्योति

युग संधि के अवसर पर घटित होने वाले कटु घटनाक्रमों को ध्यान में रखते हुए सोचा जा सकता है कि प्रस्तुत समस्याओं का समाधान बिना विनाशकारी उथल-पुथल किए संभव नहीं हो सकता था ? क्या भगवान अपनी शक्ति से अशुभ को शुभ बिना किसी अप्रिय घटना चक्र को अपनाए नहीं कर सकते थे ? क्या जादुई परिवर्तन संभव नहीं हो सकता था ?

इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए हमें विश्व विधान के साथ जुड़ी हुई व्यापक परिवर्तन प्रक्रिया को तनिक गहराई से समझना और अधिक दूरदर्शी दृष्टि से देखना होगा। प्रकृति चक्र में जन्म अभिवर्धन जीर्णता और मरण का एक नियत निर्धारित क्रम है। यह न होता तो उसका विकल्प स्थिर रहता। सब पदार्थ और प्राणी सर्वदा एक ही स्थिति में रहते। मरण रुकता तो जन्म भी रुकता। अन्यथा जन्म जारी रहते और मरण का प्रबंध न होने पर धरती का विस्तार एक ही शताब्दी में मात्र मनुष्य प्राणी तक के लिए अपर्याप्त हो जाता। स्थिरता की सुविधा तो रह सकती है पर नवीन का सौंदर्य और परिवर्तन का उत्साह एक प्रकार से समाप्त ही हो जाता है। सर्वत्र नीरसता छाई रहती और निर्जीव पिंडों की तरह प्राणी अपना समय क्षेप करते रहते। विनोद प्रिय हलचलों में रस लेने वाले परमेश्वर को कदाचित् वह स्थिति अभीष्ट न रही होगी और उत्पादन अभिवर्धन, अवसाद समापन का गतिचक्र निर्धारित किया गया होगा। जब वह चल ही पड़ा तो जन्म की तरह मरण भी नितांत आवश्यक हो गया।

काया भी एक मशीन है जो समयानुसार घिसती और अंततः निरर्थक बनती चली जाती है। उपयोगिता होने पर वस्तुओं को उसी स्थिति में बना नहीं रहने दिया जाता वरन् उसे गलाने ढालने आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रबंध करना होता है। मानवी काया के संबंध में भी यही बात है। सारे पुर्जे घिस जाने के बाद न शरीर ठीक प्रकार अपना काम कर पाता है न उसमें रहने वाला प्राणी सुखी रहता है कि उसे नया जन्म दिया जाए।

वृद्ध कुरूप और दुःखी होता है, बच्चा सुंदर और सुखी। भगवान वृद्ध के प्रति निष्ठुर या रुष्ट हुए लगते भर हैं, पर वस्तुतः इसमें उनकी सद्भावना और दूरदर्शिता ही काम कर रही है। वे निरर्थकता को उपयोगिता में, कुरूपता को सुंदरता में बदलने का अपना कौशल भर प्रकट करना चाहते हैं। उनकी प्रकृति सृजन है। उसे अनवरत जारी रखने के लिए कचरे को खाद बनने और उसके सहारे नए पौधे उत्पन्न करने की रचनात्मक विधि-व्यवस्था ही काम करती है। युग परिवर्तन के अवसर पर होने वाली उथल-पुथल में तात्कालिक कर्कशता तो है, पर उसे किसी दुष्ट-दुर्बुद्धि से नहीं किया गया है। उसके पीछे भविष्य की सुखद संभावना का उपक्रम ही काम कर रहा होता है।

प्रस्तुत परिस्थिति में उपयोगिता बेतरह घट गई और अवांछनीयता का अप्रत्याशित विस्तार हुआ है। इन दिनों व्यक्ति और समाज का जो स्वरूप है उसे जराजीर्ण काया वाले ऐसे वयोवृद्ध की तरह समझा जा सकता है जो न स्वयं सुखी रह रहा है और न दूसरों को सुखी रहने दे रहा है। भविष्य में सुधरने की भी कोई आशा नहीं है। घिसे पुर्जे और टूटे बर्तन आए दिन मरम्मत माँगते हैं फिर भी ठीक से काम करते नहीं। ऐसी दशा में बुद्धिमान न उन्हें नए सिरे से गलाने और ढालने की बात सोचते हैं, जीते कराहते भारभूत वयोवृद्ध को यदि उछलते हँसते सुंदर और आकर्षक बालक में बदलने के लिए कोई व्यवस्था बनती है, तो उसके नियोजन कर्त्ता को सद्भाव संपन्न ही कहा जाएगा। गलाने ढालने वाले का क्रियाकलाप देखने में उन्मादियों जैसा लगता है, उसमें ध्वंस और विनाश के दृश्य दीख पड़ते हैं, इतने पर भी बुद्धिमत्ता को यह स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होती कि यह सारा प्रयत्न अभिनव और सुखद सृजन के निमित्त ही किया जा रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों घटित होने वाले प्रकृति प्रकोपों और मानवी विग्रहों को देखते हुए लगना तो अप्रिय और कष्टकर ही चाहिए। इतने पर भी निराश एवं अधीर होने की आवश्यकता नहीं है। झाड़ियाँ काट कर उद्यान लगाने और टीलों का विस्मार करके खेत बनाने के समय भी लगता तो अटपटा है, पर उसके नियोजनकर्त्ता विश्वासपूर्वक यही कहते हैं कि यह सज्जनोचित गति-संभावनाओं को ध्यान में रख कर किया जा रहा है। भले ही तत्काल उसे तोड़-फोड़ की संज्ञा दी जाए और कर्त्ता को विध्वंसक ठहराया जाए।

दूरदर्शिता, क्रिया और संभावना का सहज अनुमान लगा लेती है कि अगले दिनों जिसका परिणाम कष्टकर होना है, उस मार्ग पर कदम न बढ़ने या लौटाने का काम समझदारी अपने आप करती रहती है। फलतः उसे भर्त्सना एवं प्रताड़ना सहने की आवश्यकता नहीं पड़ती यह सज्जनोचित गतिविधियाँ हुई जो सुखद भी लगती हैं और सराही भी जाती हैं। इसके विपरीत एक दूसरा वर्ग है, अदूरदर्शी समुदाय का, इसे नर पशु कहा जाता है। पशुओं में तात्कालिक लाभ भर की अकल होती है, वे परिणामों का अनुमान नहीं लगा पाते। नम्रता बरतने और समझने से भी उस पर कोई असर नहीं पड़ता, ये प्रताड़ना की भाषा समझते हैं। फलतः ग्वाले को अपने झुंड से जो कहना होता है, वह लाठी के इशारे से ही कहता है। घुड़सवार को एड़ लगाम और चाबुक के सहारे ही अपना मंतव्य घोड़े को समझाना पड़ता है। अनुरोधों की भाषा वह समझ सका होता और दूरगामी हित अनहित का, औचित्य-अनौचित्य का अनुमान लगा सका होता, तो शायद घुड़सवार को उन उपकरणों का उपयोग न करना पड़ता जो देखने और बरतने में अशोभनीय लगते हैं।

मानवीय काया में पशु प्रवृत्तियों का अस्तित्व ही नहीं बाहुल्य भी रहता है। उस पर न परामर्श का असर पड़ता है और न अनुरोध आग्रह का। रास्ते पर लाने के लिए प्रताड़ना ही एक मात्र नीति रह जाती है। इसके बिना न पालतू पशुओं से काम लिया जा सकता है और न वन्य पशुओं की विनाश लीला से बचाव संभव हो सकता है। अंकुशों और आँसुओं की आवश्यकता इसी वर्ग को मर्यादा में रखने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए पड़ी होगी। प्रताड़ना और दंड व्यवस्था का सारा उपक्रम बड़ा कटु कर्कश लगता है, पर किया क्या जाए ? दुर्बुद्धि और दुष्टता से कैसे निपटा जाए ? दयार्द्र न्यायाधीशों तक को फाँसी की सजा सुनाने और प्रशासकों को जल्लाद बुलाने का प्रबंध करना पड़ता है। इसमें जहाँ आत्यांतिक अनुपयोगी की स्थिति बदल देने का भाव है वहाँ एक दूसरा प्रयोजन यह भी है कि दूसरों को शिक्षा मिले।

मनुष्य और पशु की काय संरचना का अंतर स्पष्ट है। इतने पर भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि मनुष्य प्राणियों में से अधिकांश का अंतरंग पशु प्रवृत्तियों के ढांचे में ढला होता है। तात्कालिक लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थ ही उनको रुचता है। लिप्सा की पूर्ति में वे आचरण करते हैं। यह स्वेच्छाचार चलने दिया जाए तो अराजकता फैलेगी और आतंक का राज्य, व्यवस्था और संस्कृति का सत्यानाश करके रख देगा। अतएव पशु प्रवृत्ति का नियमन आवश्यक है। धर्म की प्रकृति सद्भाव संवर्धन की है और शासन की नीति में नियंत्रण प्रधान है। पुलिस, कचहरी, जेल एवं अस्त्र-शस्त्रों पर जो असाधारण व्यय करना पड़ता है और अनेकों को जो प्रताड़ना देनी होती है उसका और कोई विकल्प नहीं। पशु प्रवृत्तियों को सदाशयता का महत्त्व समझाने के लिए दंड व्यवस्था का आश्रय लिए बिना और कोई उपाय नहीं।

प्राचीन काल में रिवाज था कि फाँसी, अंग-भंग आदि का दंड क्रियान्वित किए जाते समय उस वीभत्स दृश्य को देखने के लिए जन समुदाय को ढिढोरा पीटकर आमंत्रित किया जाता था। देखने को भारी भीड़ जमा हो, इसका प्रयत्न और प्रबंध होता था। उस दंड कृत्य को देखकर दर्शक आतंकित होते थे। चर्चा फैलती थी और अनेकों को यह अनुमान लगाने का अवसर मिलता था कि कुकृत्यों का दुष्परिणाम कितना भयानक होता है। मनुष्यों के कानूनों में इस प्रकार का खुला प्रदर्शन घट रहा है, किंतु प्रकृति व्यवस्था यथावत् बनी हुई है। व्यापक विनाश के दृश्य लोगों का दिल दहलाने और अनुमान लगाने के लिए विवश करते हैं कि यहाँ मनमानी नहीं चल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती। किसी अदृश्य सत्ता का शासन मौजूद है और उसमें पुरस्कार ही नहीं दंड व्यवस्था का भी पूरा-पूरा प्रावधान है। प्रकृति प्रकोपों से लेकर मानवी विग्रहों द्वारा होने वाली विभीषिकाओं के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि जन साधारण को नियंता के रोष का भी ध्यान बना रहे।

युग संधि के मध्यवर्ती बीस वर्षों में सन् ८० से २००० तक की अवधि में जो महान् परिवर्तन हो रहे हैं उनमें बहुत कुछ तो अदृश्य ही रहा है और रहेगा। क्योंकि परिवर्तन पदार्थों का नहीं आस्थाओं का होना है। आस्थाएँ दीखती नहीं, इसलिए इस क्षेत्र की उथल-पुथल का स्वरूप समझना और विवरण लिखना किसी के लिए भी शक्य न हो सकेगा। जो दृश्यमान हैं चर्चा उसी की होगी। दृश्य घटनाओं में एक होगा अशुभ का निराकरण उन्मूलन, दूसरा होगा—शुभ का आरोपण अभिवर्धन। एक के लिए आवश्यक और अवांछनीय को हटाने की ध्वंसात्मक प्रक्रिया चलेगी और दूसरी ओर भावनात्मक नव निर्माण के अनेकानेक आधार खड़े होंगे।

चर्चा ध्वंस की चल रही है। आवश्यक नहीं कि ध्वंस लीला की चपेट में मात्र अवाँछनीयता ही आए। सज्जनता को भी परिस्थिति के दबाव में त्रास सहना पड़ सकता है। गेहूँ के साथ चक्की में घुन पिस जाता है। सूखे के साथ गीला भी जलता है। रोग कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए खाई गई औषधि स्वस्थ कणों को भी हानि पहुँचाती है। यह अपवाद तो चलते ही रहते हैं, किंतु सामान्यतया यही होता है कि गेहूँ ही पिसता है, सूखा ही जलता है, विषाणु ही मरते हैं। उथल-पुथल की वेला में प्रकृति की विनाश लीला में अवांछनीयता का उन्मूलन ही उद्देश्य रहता है। चपेट में दूसरे भी आ जाएँ तो बात दूसरी है।

चपेट में निर्दोष दीखने वालों के आने का भी एक कारण है। यह समूची सृष्टि आत्मा सत्ता के सूत्र में बँधी है। उसका संचालन संयुक्त जिम्मेदारी के आधार पर हो रहा है। सब पुर्जे मिलकर काम करते हैं तो घड़ी चलती है। संसार को समुन्नत, समाज को सुसंस्कृत रखना भी सबका सम्मिलित उत्तरदायित्व है। व्यक्तिगत सुख शांति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह ही सामूहिक प्रगति और समृद्धि के लिए प्रयत्न होना चाहिए। मानवी सत्ता के साथ ईश्वर प्रदत्त यह जिम्मेदारी हर किसी पर लदी है कि वह जितना ध्यान अपनी निजी सुविधा बढ़ाने और भविष्य को बनाने पर देता है उतना ही विश्व उद्यान को सुरम्य बनाने पर दे।

माली अपना घर भी बुहारता है और बगीचे को भी साफ सुथरा रखता है, अपने भोजन की व्यवस्था करता है और पेड़ पौधों के खाद पानी की भी। ठीक इसी तरह प्रत्येक मनुष्य को आत्म कल्याण ही नहीं, लोक मंगल में निरत रहने का भी उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। इसमें जो लोग प्रमाद करते हैं वे भी एक प्रकार से अपराधी ही बनते हैं। आक्रमण ही मात्र अपराध नहीं है लापरवाही और गैर जिम्मेदारी का आचरण करने पर भी दंड मिलता है भले ही उसने किसी पर हमला न किया हो।

संयुक्त जिम्मेदारी न निभाने पर भी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में दोषी बनता है और इसके फलस्वरूप वे सब भी अपराधी और दंड के भागी बनते हैं जो समाज को सुखी और समुन्नत बनाने में आलस्य और प्रमाद बरतते हैं। उदासीनता और उपेक्षा मनुष्यकृत कानूनों में भले ही दंडनीय अपराध न हो पर ईश्वर की दृष्टि में वह भी उसके आदेश की अवहेलना है। ऐसी दशा में जो प्रत्यक्षतः निर्दोष दिखते हैं वे भी अपराधियों की गणना में आते हैं।

आक्रमण न करने तक ही कर्त्तव्य की इति श्री नहीं हो जाती, उसे रोकने का प्रयत्न न करना भी मानवी शालीनता का उल्लंघन है। कोई आत्महत्या का प्रयत्न करे और दर्शक उसे चुपचाप देखते रहें, आँख के सामने हत्या, बलात्कार आदि के अपराध होते रहें और उसमें कोई हस्तक्षेप न किया जाए, अपराधों के षडयंत्र चलते रहें और जानकारी रहने पर भी उसे पुलिस को सूचित करने या विफल बनाने का प्रयत्न न किया जाए तो वह चुप रहने वाला मूक दर्शक भी अपराधी माना जाएगा और भर्त्सना तथा दंड का पात्र बनेगा।

इस दृष्टि से युग परिवर्तन की अवधि में कुछ अपवाद तो अकारण भी चपेट में आने वाले हो सकते हैं, पर अधिकांश पर यह आरोप लगता है कि विश्व विनाश का क्रम चलता रहा और उसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हस्तक्षेप करने के स्थान पर वे मूक दर्शक बने बैठे रहे। ऐसी दशा में यदि उन्हें भी भगवान का कोप भाजन बनना पड़ता है तो इसे निर्दोषों को मिला दंड नहीं कह सकते।

सरकारी कानून में संयुक्त जिम्मेदारी न निभाने पर दंड विधान की व्यवस्था है। अपराधी क्षेत्र के निवासियों पर संयुक्त जुर्माने किए जाते हैं। इस दंड के भुगतने वालों में से अधिकांश ऐसे होते हैं, जिन्होंने स्वयं कोई अपराध नहीं किया। फिर भी सामाजिक न्याय यह कहता है कि नागरिक कर्त्तव्यों में बँधे रहते हर किसी को अपने क्षेत्र में शांति बनाए रहने, अपराध रोकने, पीड़ितों की सहायता करने के लिए सतर्क एवं सक्रिय रहना चाहिए। इसमें उपेक्षा बरतने वाले भी प्रकारांत में अपराधी बनते हैं और दंड भुगतने के लिए, सामूहिक जुर्माना चुकाने के लिए बाधित किए जाते हैं। युद्ध काल में देश भर के जवानों की अनिवार्य भरती की जाती है इससे इन्कार करने वालों को अपराधी माना जाता है और जेल भेजा जाता है।

प्रस्तुत युग परिवर्तन की वेला में होने वाले ध्वंस को "मरे को मारे शाह मदार" वाली उक्ति के अनुसार दैवी अव्यवस्था, निष्ठुरता, प्रतिशोध आदि समझा जा सकता है पर वस्तुतः वैसा है नहीं। नव सृजन ही परमेश्वर का अभीष्ट है, संतुलन बनाना ही उसको प्रिय है। धर्म की स्थापना के लिए ही भगवान के अवतार होते हैं। इस प्रयोजन में अधर्म का उन्मूलन आवश्यक होता है। अवतारों का प्रमुख कार्य सृजन होता है। अधर्म का नाश उसी का एक अंग है, अतएव यह उपक्रम भी चलता है। अंततः यह सब कुछ सुसंतुलित बनाने और उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए ही किया है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकता, समता और सुव्यवस्था ही—भावी युग की रूपरेखा

मनुष्य ने प्रगति तो बहुत की है, फिर भी उसकी सामुदायिक प्रवृत्ति में अभी दो अवांछनीयताएँ बेतरह घुसी हुई हैं और उस गरिमा से वंचित रख रही हैं, जो नियति ने उसे उदारता पूर्वक प्रदान की है।

दो दुष्प्रवृत्तियों में से एक है—संकीर्णता, दूसरी है-विलगता। दृष्टिकोण संकीर्णता और व्यवहार में विलगता घुस पड़ने से वे दोनों ही क्षेत्र विकृत हो चले, फलतः उत्पन्न होने वाली सड़न भरी विषाक्तता ने मनुष्य का स्तर और समाज गत वातावरण बेतरह अस्त व्यस्त करके रख दिया है। फलतः समृद्धि और प्रकृति, सुख और शांति के स्थान पर विनाश और विग्रह उभरता, अनेकानेक संकट खड़े करते दीखता है। भावना क्षेत्र की इन दो दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा पाया जा सके, तो समस्त समस्याओं का हल निकले और उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण अनायास ही बन पड़े।

गूलर के भुनगे और कुएँ के मेंढक अपने दायरे में संतुष्ट पाए जाते हैं। पिंजड़े में बंद पक्षी निश्चिंत भी रहते हैं और सुरक्षा भी देखते हैं। इतने पर भी जिन्होंने विस्तृत क्षेत्र में विचरण करते हुए विशालता का आनंद लिया है, उनके लिए संकीर्णता का वह दयनीय दायरा बहुत ही लज्जा जनक और कष्ट प्रद प्रतीत होता है। निर्वाह ही तो सब कुछ नहीं है। जीवन में इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। इसका परित्याग करके मात्र उदरपूर्ति तक ही सीमाबद्ध रहा जाए, तो जड़-चेतन में क्या अंतर रहा ? वृक्ष-वनस्पति भी निर्वाह साधन उपलब्ध कर लेते हैं। कृमि-कीटकों को भी उसकी कमी नहीं पड़ती। फिर आत्मा की गरिमा को पोषण कहाँ मिला ? आंतरिक उल्लास का विकास कब संभव हुआ। महानता की अभिलाषा ही महत्त्वाकांक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहलाती है। प्रगति का मार्ग अवरुद्ध रहे, तो हाथ पैर बँधे कैदी जैसी जिंदगी जी लेने पर क्या मिला ? अन्न वस्त्र तो उसे भी मिल जाता है।

अध्यात्म क्षेत्र की संकीर्णता से तात्पर्य है अपनेपन का दायरा छोटी परिधि में जकड़ लेना। शरीर तक अपनी सत्ता मानने वाले आत्मा की परवाह नहीं करते, भविष्य की ओर से आँखें बंद किए रहते हैं, परिवार और समाज के प्रति निर्धारित उत्तरदायित्व का पालन नहीं करते। कितने ही मध्यम, आवारा स्तर के लोग जो कमाते हैं, शरीर सुख के लिए उड़ाते रहते हैं। उसमें अन्य किसी की भागेदारी नहीं सोचते। ऐसे 'इक्कड़' वन्य पशुओं में भी होते हैं। हाथी, सुअर, हिरन आदि में से कभी-कभी कोई-कोई झुंड छोड़कर एकाकी रहने लगते हैं। इसमें वे अनुशासन से स्वच्छंद रहने का लाभ देखते हैं, किंतु वैसा करते ही अपनी सामाजिकता गँवा बैठते हैं और ऐसी स्नेह सौम्यता जैसी सभी विशेषताएँ गँवा कर निष्ठुर-निर्मम स्तर का स्वभाव बना लेते हैं। अकारण किसी पर हमला कर बैठने की उद्दंडता बरतते रहते हैं। वनवासियों पर आतंक जमाकर वे घृणा तिरस्कार उत्पन्न करते हैं और प्रतिशोध की उसी आग में बेमौत जल मरते हैं।

आत्मीयता—सरसता उत्पन्न करती है। जो अपना हो वही प्यारा लगता है। यह दायरा जितना छोटा होगा, प्रियजन उतने ही कम रह जाएँगे और उस लाभ से वंचित रहना पड़ेगा, जो असंख्यों को अपना मानने, बना लेने पर उपलब्ध हो सकता है। आत्मीयता का आरोपण जिस पर भी किया जाएगा, वह अपना लगेगा और आत्म विस्तार के परिकर का सदस्य बनकर आनंद की अभिवृद्धि करेगा। जिसके अपने कम हैं, उसे सभी विराने दीखते हैं। वह सदा अपने को असुरक्षित, अभाव ग्रस्त और असंतुष्ट अनुभव करेगा। आत्मीयता के विस्तार का अर्थ है, जागृतों को अपनेपन की परिधि में जकड़ लेना। अधिक सुविधा साधनों से प्रसन्नता अनुभव होती है, गर्व-गौरव प्रतीत होता है। उसी प्रकार जिसके, जितने अधिक अपने हैं, वह आत्मिक दृष्टि से अपने को उतना ही अधिक सुसंपन्न अनुभव करता है। यही है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसन्नता का केंद्र बिंदु। अनेकों के दुःख बाँट लेने और अपने सुख अनेकों को बाँट देने पर ही मनुष्य हँसती-हँसाती, हलकी-फुलकी जिंदगी जी सकता है।

आत्म विकास की अध्यात्म प्रक्रिया का सीधा सच्चा स्वरूप इतना ही है कि अपनेपन का दायरा अधिकाधिक विस्तृत करते चला जाए। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता अपनाते हुए अधिकाधिकों के साथ आत्मीयता-घनिष्टता रिश्ता स्थापित किया जाए। अपनों के सुख-दुःख का जिस प्रकार ध्यान रखा जाता है। उसी प्रकार अन्यान्यों का भी रखा जाए। जिस प्रकार उपलब्ध क्षमताओं का लाभ साधारणतया अपनों को पहुँचाया जाता है, उसी प्रकार विशेष मनःस्थिति में उस उदार सेवा साधना को अधिक लोगों तक विस्तृत किया जाए। यहाँ तक कि उसमें प्राणि जगत को ही नहीं वनस्पतियों तक को जकड़ लिया जाए। गीता के अनुरूप सबको अपने और अपने में सबको देखा जाए। यही है सच्चा अध्यात्मवाद, इसी की छाया लेकर भौतिकवादियों ने समाजवाद या साम्यवाद की संरचना की है।

साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ, लोकसेवी स्तर के महामानवों की एक ही प्रमुख विशेषता है कि वे आत्मीयता का परिष्कार करते हैं और उसमें समूचे समाज या संसार को जकड़ लेते हैं। विराट् दर्शन यही है। समुदाय को भगवान मानने और उसके साथ श्रद्धा-संवेदना जोड़ लेने पर भगवद्भक्ति का व्यावहारिक स्वरूप लोक मंगल की साधना बनकर रह जाता है। योगाभ्यासों से सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन की सेवा साधना को सर्वोत्तम एवं सर्व सुलभ माना गया है। उसमें समाज के उपकारों का प्रत्युपकार बन पड़ने से ऋण मुक्ति का हलकापन प्रतीत होता है। आत्म गौरव निखरता है और सेवा के बदले सम्मान एवं सहयोग बरसने लगता है। थोड़ा समय या धन गँवा देने के प्रथम चरण में इसमें कुछ घाटा जैसा प्रतीत होता है, पर देर तक वस्तु स्थिति अप्रकट नहीं रहती। कुछ ही समय में बीजारोपण अंकुरित होता, लहलहाता, फलता-फूलता और समुन्नत स्तर पर पहुँच कर सिर को गर्वोन्नत रख सकने की स्थिति में होता है। परमार्थ के निमित्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उठाए गए घाटे को ठीक ऐसा ही दूरदर्शी निर्धारण समझा जा सकता है।

स्वार्थी वे जो मात्र शरीर को, स्त्री बच्चों को ही अपना मानें और अन्यान्यों के प्रति उपेक्षा बरतें। परमार्थी वे जो अपने स्वार्थों को परम व्यापक बना ले। आत्मासीमित को और परमात्मा असीम को कहते हैं। अपनेपन का दायरा बढ़ाने वाले सबके सुख-दुःख में सक्रिय रूप से भागीदार बनने वाले प्रकारांतर से परमात्मा तक ले जाने वाले सुनिश्चिय राजमार्ग पर चलते हैं, महामानवों ने सदा यही रीति-नीति अपनाई है, वे शरीर या परिवार के प्रति अनिवार्य उत्तरदायित्वों का तो निर्वाह करते रहे हैं, किंतु उतने तक सीमित नहीं रहे। देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति अपने वरिष्ठ उत्तरदायित्व को भी निभाया है। आवश्यकता हुई है, तो महान के लिए तुच्छ को गौण मानने का साहस भी अपनाया है। संत, सज्जन, लोक सेवी, देशभक्त, महामानव प्रायः यही करते रहे हैं। कुटुम्बियों की सुविधा में कटौती करके भी उन्होंने समाजगत सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में अपने को नियोजित किया है। यहाँ तक कि इसके लिए तथाकथित स्वजनों का विरोध भी सहा है और उनके आग्रह को निरस्त भी किया है। वैराग्य और त्याग-बलिदान की चर्चा इसी आदर्श के प्रतिपादन में होती रहती है। अनेक बार संचित संकीर्णता इस मार्ग में बाधक भी होती है, किंतु उदारता की उमंगें व्यवधान को टिकने कहाँ देती हैं।

संकीर्णता की ही तरह दूसरा व्यवधान बिखराव का है। यों इन दोनों को भी एक दूसरे का अनन्य सहयोगी कहा जा सकता है। स्वार्थ परता और अहंता का आग्रह यह रहता है कि अपना स्वतंत्र ढकोसला खड़ा किया जाए। अपनी कमाई का लाभ स्वयं लिया जाए। आत्म प्रदर्शन से अहंता का पोषण किया जाए। ऐसे ही अनेक मनोवैज्ञानिक कारण हैं, जिनसे प्रेरित होकर लोग समूह के सदस्य रहने की अपेक्षा अपना शैतूल अलग खड़ा करते हैं। डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाने वाले, ढाई चावल की खिचड़ी पकाने वाले प्रायः इसी स्तर के होते हैं। आठ कनौजिया नौ चूल्हे की विडंबना वे ही रचते रहते हैं। बिखराव में उन्हें अहंत का पोषण तो मिलता है, पर ऐसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेकानेक लाभों से वंचित रहना पड़ता है, जो समुदाय के साथ घनिष्ठता या एकात्मकता स्थापित करने के उपरांत हो सकते हैं। 'इक्कड' तो दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेंके जाते हैं। संकीर्ण स्वार्थ परता अपनाने वालों के हाथ केवल अनर्थ ही लगता है।

क्या व्यक्तिगत ? क्या समूह व्यवस्था-दोनों ही क्षेत्रों में हमें विशालता, उदारता एवं एकता का परिचय देना चाहिए। संयुक्त परिवार जैसी सहकारिता का हर जगह प्रतिपादन समर्थन करना चाहिए और उसे परिपक्व गतिशील बनाने में कुछ उठा न रखना चाहिए। पहल अपनी हो, तो इन सत्प्रवृत्तियों को अपनाए जाने में भी देर न लगेगी। वरिष्ठ लोग जो करते हैं, कनिष्ठ उसका अनुगमन सहज ही करनें लगते हैं। सामूहिकता को, एकता को सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने में जहाँ, जिस प्रकार, जो भी किया जा सकना संभव हो, किया ही जाना चाहिए। संकीर्णता और विलगाव की प्रवृत्ति को निरुत्साहित ही करते रहना चाहिए।

जनसंख्या की वृद्धि, वैज्ञानिक प्रगति, आर्थिक समृद्धि एवं बढ़ती बुद्धिमत्ता ने संसार को बहुत छोटा कर दिया है। पाँच वर्षों पुरानी दुनियाँ से आज की दुनियाँ प्रायः सर्वथा भिन्न है। उसकी अगणित समस्यायें, कठिनाइयाँ, विपत्तियाँ एवं विभीषिकाएँ ऐसी हैं, जिनके समाधान के लिए सामयिक उपाय सोचने होंगे। प्रस्तुत चक्रव्यूह से निकलने के लिए नई रणनीति अपनानी पड़ेगी। अब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पुरानी हो गई। उसके द्वारा क्षेत्रीय स्वार्थ संघर्ष ही खड़े किए जा सकते हैं। किए भी जा रहे हैं स्थायी समाधानों के सूत्र उसके पास नहीं। इसी प्रकार भाषाएँ, संप्रदाय, प्रचलन, परंपरा, आचार-व्यवस्था जैसे पुरातन निर्धारण समय के साथ-साथ नहीं चल पा रहे हैं। उपयोगिता सिद्ध करने और समाधान में योगदान करने की अपेक्षा वे नए-नए संकट खड़े करने में स्वयं ही व्यवधान बन रहे हैं। उलटी स्थिति को उलट कर सीधा करने के अतिरिक्त और कोई चारा है नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वतोन्मुखी एकता, समग्र एकता और सार्वभौम सुव्यवस्था के अतिरिक्त विनाश को विकास में बदल सकने वाला उपचार वर्तमान परिस्थितियों में संभव नहीं दीखता।

सर्वतोन्मुखी एकता से तात्पर्य है—विश्व राष्ट्र, विश्व भाषा एवं विश्व धर्म का अभिनव निर्धारण, जन समुदाय को उन्हें अपनाने के लिए सहमत या वाधित करने के प्रबल प्रयास। यही हैं, वे उपाय अवलंबन, जिनके सहारे एक संस्कृति का तत्त्व ज्ञान और एक आचार संहिता का निर्धारण किया जा सकता है। इसी आधार पर विश्व एकता बनेगी और निभेगी। विग्रहों का बर्बादियों का वर्तमान वातावरण ऐसी ही दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाने पर निरस्त हो सकेगा।

दूसरा सूत्र है—समता, जाति और लिंग के आधार पर बरती जाने वाली असमानता को पूरी तरह निरस्त कर दिया जाए। मनुष्य की एक विरादरी रहे। मित्रता तो बाल वृद्ध की स्थिति में भी रहती है। वैसी ही नर और नारी के बीच भी कार्य क्षेत्र और नियति क्रम के अनुरूप रह सकती है, परंतु समाज व्यवस्था में कोई ऐसा अवरोध न रहने दिया जाए, जिसमें नर और नारी में से किसी को वरिष्ठ-कनिष्ठ कहा जा सके और भेदभाव का अवरोध अड़ सके। जन्म जाति के आधार ऊँच-नीच जैसा वर्गीकरण करने की न्याय निर्धारण में कहीं भी गुंजायश नहीं है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जन्मे काले, सफेद, पीले, गेहुँए रंग वाले भी इस आधार पर अपनी पृथकता या विशिष्टता सिद्ध न कर सकें। सभी अपने को विश्व नागरिक मानें और मानव विरादरी का एक अविच्छिन्न घटक समझें।

तीसरा सूत्र है—सार्वभौम सुव्यवस्था। इसमें आर्थिक क्षेत्र की आपाधापी को बदल कर उत्पादन और वितरण की सार्वभौम प्रबंध व्यवस्था के अंतर्गत लाया जाना है। देशों की वर्तमान सीमाएँ समाप्त करके उन्हें एक विश्व राष्ट्र के प्रबंध संस्थानों के हिसाब से प्रांत जैसी स्थिति में विभाजित कर दिया जाए। समस्त धरती की भूमि विश्व राष्ट्र की हो और उस पर बसने के लिए क्षेत्र एवं जनसंख्या के हिसाब से नए निर्धारण हों और उत्पादन और वितरण के बीच तारतम्य बिठाया जाए, जिसमें न कोई अतिरिक्त संग्रह उपभोग करे और न किन्हीं को अभाव ग्रस्त स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में रहना पड़े। बड़े साधनों के लिए बड़े उद्योग रहें, पर जिन्हें लघु उद्योगों में विकसित कर हर हाथ को काम देने की योजना के अंतर्गत लाया जा सकता है, उन्हें बड़े कारखानों में न जाने दिया जाए।

शहरी आबादी बखेरी जाए और कस्बों को पनपाया जाए। शिक्षा, चिकित्सा, स्वच्छता, न्याय जैसी आवश्यकताएँ सर्व सुलभ रहें। इस नए निर्धारण के लिए आवश्यक है कि विश्व संपदा केंद्रित रहे और उपयुक्त प्रयोजनों के लिए उसका विवेकपूर्ण उपयोग होता रहे। संपदा कुछेक हाथों में केंद्रित न रहे, तभी इस संसार में गरीबी मिटाने वाला नया तंत्र खड़ा किया जा सकेगा। युद्धों और महायुद्धों का सदा के लिए अंत करने के लिए आवश्यक है कि क्षेत्रों में आंतरिक व्यवस्था के लिए पुलिस और दस्ती हथियार रहे। झंझटों को लड़ाई से नहीं, वरन् न्याय-पंचायत से हल कराया जाए। भाषाओं की भिन्नता मनुष्य के ज्ञान विस्तार में अत्यधिक भारी, कष्ट कर, खर्चीला और झंझट भरा व्यवधान है। एक भाषा एक लिपि होने से ज्ञान की सुलभता और व्यापकता, देखते-देखते हजारों गुनी अधिक बढ़ सकती है। यही बात संस्कृति, आचरण, कानून, रहन-सहन आदि के संबंध में भी कही जा सकती है। उनमें एकरूपता लाने के लिए जिस निष्पक्षता, दूरदर्शिता उदाहरण की आवश्यकता है, उसे हर व्यक्ति अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में विकसित करना आरंभ कर दे। ताकि समयानुसार उस बीजांकुर को विशाल वृक्ष बनने का अवसर मिल सके।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धांत, यों था तो सदा से प्रशंसनीय, किंतु अब वह समय की अनिवार्य आवश्यकता बनकर सामने आया है। हमें संकीर्णता के बंधन काटने चाहिए और उदार आत्मीयता, एकता की दिशा में हर किसी का चिंतन प्रवाह बनना चाहिए। बिलगाव की बात सोचनी बंद करें। हिल मिलकर रहने और मिल-बाँटकर खाने की नीति अपनाएँ तभी उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण हो सकेगा। पारिवारिकता की नीति ही सर्वोत्तम है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श हमें अपने चिंतन और व्यवहार में समाविष्ट करने का प्रयास आरंभ कर देना चाहिए, ताकि मानवी गरिमा और प्रगति को सतयुग की तरह पुनर्जीवित किया जा सके।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आद्यशक्ति की युग संधि की वेला में महती भूमिका

आद्य शक्ति गायत्री अब युग शक्ति बनने जा रही है। प्रायः इस महामंत्र का उपयोग अंतराल के सुधार परिष्कार हेतु किया जाता है। व्यक्तित्व को पवित्र और प्रखर बनाने में उसकी शिक्षा का असाधारण उपयोग है। इतने कम अक्षरों का इतना छोटा, इतना सारगर्भित धर्म शास्त्र, तत्त्व दर्शन संसार में कहीं कोई दूसरा है नहीं। उसके एक-एक अक्षर में जीवन के हर क्षेत्र में प्रयुक्त हो सकने योग्य ऐसा सद्ज्ञान भरा पड़ा है जिससे अध्यात्म चिंतन और धर्म व्यवहार के दोनों ही पक्ष सधते हैं। गायत्री को त्रिवेणी कहा गया है—आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता रूपी तीन धाराओं का उसके तीन चरणों में समावेश हुआ है।

ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग का—सत्यं शिवं सुंदरम् का सत्‌चित्त-आनंद का जैसा संगम त्रिपदा में हुआ वैसा उदात्त चिंतन से संबंधित प्रतिपादन अन्यत्र नहीं देखा जा सकता। आत्म विज्ञान के क्षेत्र में उतरने पर उसकी विविध शक्तियाँ स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीरों को प्रभावित कर सकने की क्षमता से संपन्न है। उपासना, साधना और आराधना के रूप में उसका उपयोग प्रतिभा, प्रखरता के अभिवर्धन के लिए किया जाता है। साधक को ओजस्वी, मनस्वी और तेजस्वी बनने का अवसर मिलता है। अलंकारिक भाषा त्रिपदा के तीन चरण ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र के रूप, सरस्वती, लक्ष्मी, काली के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। तुलसीदास जी ने जिस त्रिवेणी संगम में स्नान करने का महात्म्य 'काक होंहि पिक वकहुँ मराला' के रूप में वर्णन किया है, उसे उसी आध्यात्मिक संगम के रूप में समझना चाहिए, जिसे त्रिपदा गायत्री कहते हैं। सिद्धि और स्वर्ग मुक्ति को इस महा शक्ति के अवगाहन से मिलने का माहात्म्य जिन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बताया है, उन्होंने साथ-साथ यह भी कहा है कि शालीनतावादी क्रिया-प्रक्रिया-दूरदर्शी विचारणा और आदर्शवादी आस्था की परिपक्वता इसी लोक में रहने वाले मनुष्यों में देवत्व का उदय कर सकती है। गायत्री को अमृत, पारस और कल्प वृक्ष इसी दृष्टि से कहा गया है कि उसके अवगाहन से मानवी सत्ता की तीनों परतें—चेतन, अचेतन और सुपर चेतन की, मन, बुद्धि, चित्त की तीनों ही स्थितियाँ प्रभावित होती तथा निखरती हैं। फलतः इन तीनों विभूतियों से लाभान्वित होने में कोई संदेह नहीं रह जाता।

नित्य कर्म में गायत्री को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। शास्त्रोक्त विधि से त्रिकाल संध्या करने पर उसका समावेश करना अनिवार्य है। शिखा को ज्ञान केंद्र मस्तिष्क की ध्वजा कहा गया है और सूत्र यज्ञोपवीत के नौ धागों को सन्निहित नौ अनुशासनों को कंधे पर कर्म कौशल क्षेत्र का अंकुश माना गया है। गायत्री गुरुमंत्र है जिसे देव संस्कृति में प्रवेश पाते समय सर्वप्रथम दिया और पढ़ाया जाता है।

यदि गायत्री का व्यक्तिगत जीवन में व्यवहार हुआ, विश्व व्यवस्था में, समाज संरचना में भी महत्त्वपूर्ण प्रेरणा और दिशा दे सकने की क्षमता उसमें विद्यमान है। गायत्री सार्वजनीन है। उस पर किसी देश, धर्म, समाज संस्कृति का एकाधिकार नहीं है। उसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धांत कूट-कूट कर भरा है। साथ ही दूरदर्शी विवेकशीलता की कसौटी पर प्रत्येक प्रचलन परामर्श को कसते रहने का निर्देश है।'

गायत्री का वाहन हंस इसी तथ्य का प्रकटीकरण करता है कि 'नीर क्षीर विवेक' की क्षमता प्रखर रखी जाए और इस कसौटी पर बिना नवीन पुरातन का पक्षपात किए प्रत्येक प्रतिपादन को जागरूकतापूर्वक कसा जाए। महाप्रज्ञा का तात्पर्य यह है कि सत्य और तथ्य की कसौटी पर कसने के उपरांत ही किसी कथन, प्रचलन को मान्यता दें। तात्कालिक लाभ में लुभाने वाली दुर्बुद्धि का परित्याग करते हुए दूरदर्शी विवेक के सहारे मात्र मोती ही चुना जाए, औचित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही अपनाया जाए। यही है हंस निर्धारण जिसे मनुष्यों में से राजहंस परमहंस स्तर के व्यक्ति अपनाते और कृत-कृत्य होते हैं।

अगला समय प्रज्ञा-युग होगा। उसमें विवेक के सहारे ही सब कुछ सोचा, परखा और अपनाया जाएगा। प्रचलित कूड़े-कबाड़े में से मानव गरिमा के उपयुक्त, आदर्शवादी शालीनता की कसौटी पर कसने के उपरांत ही वे तथ्य अपनाए जाएँगे जो आने वाले समय में नियम अनुशासन के रूप में मान्यता प्राप्त कर सकें। इन चौबीस अक्षरों में व्यक्ति और समाज से संबंधित सभी तत्त्वों का स्पर्श करने वाले सिद्धांत विद्यमान हैं। इन्हें क्रमबद्ध संजोकर भावी संसार की आचार संहिता बन सकती है। विश्व व्यवस्था का संविधान बनाना हो तो उसके लिए भी आवश्यक सूत्र गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों में है। उनकी विवेचना इस प्रकार की जा सकती है कि उसे सार्वभौम धर्म जैसी मान्यता मिल सके।

अगले दिनों बिखराव निरस्त करना होगा और मानवी गतिविधियों को एक दिशा धारा में बहने के लिए दबाया जाएगा। बौद्धिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति ने सुविधा संवर्धन के साथ-साथ अगणित समस्याओं का घटाटोप संकट खड़ा किया है। इसका समाधान एकता, समता शुचिता के विविध सिद्धांतों को सर्वमान्य बनाने में ही संभव है। एक राष्ट्र भाषा, एक धर्मधारणा के आधार पर ही नवीन विश्व का अभिनव निर्धारण होगा। उसकी रीति-नीति क्या हो ? दिशाधारा क्या रहे, इसका सूत्र संकेत अन्यत्र कहीं ढूँढ़ना न पड़ेगा। दूरदर्शी तत्त्वदर्शियों ने उसे गायत्री बीज मंत्र में 'गागर में सागर' की तरह भर दिया है। उपासना क्षेत्र में भी किसी न किसी अवलंबन की आवश्यकता पड़ेगी। तब सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करने पर महाप्रज्ञा को स्थान बड़ी सरलतापूर्वक मिल सकता है।

धर्म संप्रदायों के वर्तमान जंजाल में से उबरने के लिए इसी राजमार्ग को अपनाया जा सकता है। भूमि सीमा और जाति वर्ग के नाम पर बंटने वाली मनुष्य जाति को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के एक सूत्र में बाँधकर उस केंद्र पर लाया जाना है जिसमें सभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिल-मिलकर रह सकें, मिल-बाँटकर खा सकें और हल्की फुलकी हँसती-हँसाती जिंदगी जी सकें। ऐसा प्रज्ञायुग लाने में महाप्रज्ञा गायत्री की असाधारण भूमिका होगी। वह एक नए सद्भाव को जन्म देगी, जिसके सहारे जन-जन का चिंतन-चरित्र एवं व्यवहार उत्कृष्ट आदर्शवादिता का पक्षधर बन सके। इसी प्रकार वह एक विज्ञान को भी जन्म देगी जिसमें मानवी सत्ता के अंग अवयवों में सन्निहित अजस्र ऊर्जा भंडार का नवयुग के अनुरूप साधन, सुविधा तथा गौरव गरिमा का समुचित उत्पादन कर सके। आत्म विज्ञान में सभी संभावनाएँ विद्यमान हैं। उसमें वाक्, प्राण तथा संकल्प की तीन धाराएँ प्रस्तुत भौतिकी के ताप, शब्द और प्रकाश माध्यमों की तरह अनंत वैभव के स्रोत उद्गम विद्यमान जो हैं।

इन दिनों सबसे विषम सामयिक समस्या है अदृश्य वातावरण में भरती जा रही विषाक्तता की। विकिरण प्रदूषण की भयावहता सर्वविदित है। इसके अतिरिक्त मानवी चिंतन की भ्रष्टता और व्यवहार की दुष्टता ने प्रकृति को बुरी तरह रुष्ट कर दिया है। वह अभी भी अनेकानेक प्रकोप बरसाती है। भविष्य में उस क्षेत्र में और भी भयावह संकट उतरने की आशंका है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, तूफान, भूकंप महामारी जैसे संकट प्रकृति प्रकोप स्तर के गिने जाते हैं। अंतः विग्रहों अपराधों की वृद्धि, दुर्बुद्धि जन्य दुरभिसंधि ही गिनी जाती है। लिप्सा और अहंता का समन्वय ही गृह युद्ध, सीमायुद्ध एवं महायुद्ध खड़े करता है। यह आशंका संभावनाएँ सामने ही मुँह बाए खड़ी हैं। इनके निराकरण में प्रत्यक्ष प्रयत्नों का उपयोग तो होना ही चाहिए। राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली विपन्नताओं का सूझ-बूझ और पराक्रम पूर्वक समाधान खोजा ही जाना चाहिए। उपचार प्रक्रिया के लिए प्रयत्नरत रहना ही चाहिए, किंतु साथ ही एक बात और भी ध्यान में रखने योग्य है कि इतना करने पर भी अदृश्य दबावों का कुचक्र ऐसा है, जिसका निराकरण किए बिना भौतिक प्रयास उपचारों से ही गुत्थी पूरी सुलझने वाली नहीं है। इसके लिए कुछ ऐसा भी करना होगा जिससे संव्याप्त विषाक्तता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिमार्जन हो सके। यह प्रयोजन अध्यात्म उपचारों की सहायता से पूरे हो सकते हैं।

रावण राज्य समाप्त होने पर भी अदृश्य में संव्याप्त असुरता समाप्त नहीं हुई। तब भगवान राम को दस अश्वमेधों की शृंखला चलानी पड़ी थी। महाभारत के उपरांत भी अदृश्य क्षेत्र की विषाक्तता समाप्त न हुई तो भगवान कृष्ण ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। यह धर्मानुष्ठान उसी प्रकार अनेकानेकों के सहयोग से संपन्न हुए जैसे कि लंका युद्ध और महाभारत अगणित योद्धाओं के पराक्रम से अनेकानेक आयुधों के आधार पर लड़े गए। इससे पूर्व भी प्रत्येक अवतार के समय ऐसे ही सामूहिक धर्मानुष्ठान हुए हैं। सीता जन्म के लिए ऋषि रक्त संचय से घड़ा भरने की और देवताओं की संयुक्त शक्ति से दुर्गा अवतरण की कथा सर्वविदित है। गिरि गोवर्धन को उठाने और समुद्र सेतु बाँधने में भी उच्चस्तरीय आत्माओं के संयुक्त प्रयास को कार्यान्वित किया गया था। अन्यान्य अवतारों के समय भी आगे या पीछे ऐसे ही धर्मानुष्ठानों की आवश्यकता पड़ी है और वह तत्कालीन ऋषियों द्वारा पूरी की गई है। विश्वामित्र का नरमेध यज्ञ बाजश्रवा का सर्वमेध यज्ञ उसी शृंखला की कड़ियाँ हैं।

शब्द शक्ति की महत्ता से सभी भली-भाँति परिचित हैं। गायत्री मंत्र के अजपा या उच्चारित जप स्वरूप के माध्यम से जो ऊर्जा उद्भूत होती है, वह सामूहिक प्रयासों के रूप में संपन्न होने पर तो चमत्कृत कर देने वाली परिणति को जन्म देती है। गायत्री मंत्र का सृष्टि में आदि से अंत तक जितना उच्चारण हुआ है, उतना किसी और मंत्र का नहीं हुआ। इसकी शब्द-तरंगें अभी भी सूक्ष्म जगत में संव्याप्त हैं। समधर्मी गुणवाली शक्तियाँ एक दूसरे को सहज ही खींच बुलाती हैं। सामूहिक धर्मानुष्ठान के रूप में एक ही समय, एक साथ एक चिंतन से कई व्यक्ति एक साथ जब भावना करते हैं तो उसका प्रभाव शब्द-स्फोट के रूप में, लेसर की मार के रूप में होता है। इस वैज्ञानिक पक्ष को ध्यान में रखते हुए भी प्रस्तुत समाधान हेतु ऐसे ही संयुक्त अनुष्ठान की आवश्यकता आ पड़ी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके लिए नैष्ठिक उपासकों का बीस वर्षीय गायत्री अनुष्ठान पहले से ही चल रहा है। समस्या की गंभीरता को देखते हुए दबाव और भी बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। महा प्रज्ञा को अदृश्य वातावरण के परिशोधन में प्रयुक्त करने में तत्त्वदर्शियों का ध्यान अधिकाधिक मात्रा में केंद्रित हो रहा है। इस दिशा में अभी और भी बड़े कदम उठाने की आवश्यकता पड़ रही है। तदनुसार एक नया निर्धारण यह किया गया है कि परिवार के बीस लाख परिजन प्रातः समय सूर्योदय के समय जिस भी स्थिति में हों काम छोड़कर पाँच मिनट गायत्री मंत्र का मौन मानसिक जप करें। साथ ही सविता का ध्यान भी। संकल्प करें कि इस प्रयास से उद्भूत शक्ति अंतरिक्ष में बिखरेगी और संव्याप्त विषाक्तता का परिशोधन निराकरण संपन्न करेगी।

जो, जहाँ, जिस भी स्थिति में है, जूते उतारकर आँखें बंद करके यह ध्यान जप संपन्न करे। सूर्योदय का समय हर देश, प्रांत का समय अलग-अलग होता है जो स्थानीय पंचागों से जाना जा सकता है। जिनके पास घड़ियाँ हों वे उनके सहारे समय जान ले। जहाँ वैसा प्रबंध नहीं है वहाँ मुर्गे की बांग, मस्जिद के अजान, मंदिर के शंख जैसी ध्वनि किसी केंद्र स्थान पर शंख विगुल आदि बजाकर इस शुभारंभ की घोषणा की जा सकती है। प्रज्ञा परिजन इस साधना में स्वयं तो सम्मिलित हों ही साथ ही यह भी प्रयत्न करें कि उनके परिवार तथा संपर्क के लोग भी इस न्यूनतम साधना को अपनाएँ। इसमें स्नान पूजा उपचार स्थान आदि का भी प्रतिबंध न होने से वह सर्वसाधारण के लिए अति सरल भी है। थोड़ा प्रयत्न करने पर इसमें सम्मिलित होने वालों की संख्या करोड़ों तक पहुँच सकती है।

प्रज्ञा परिजनों की संख्या इन दिनों प्रायः बीस लाख है। पाँच मिनट में न्यूनतम जप साठ मंत्रों का हो जाता है। बीस लाख को साठ से गुणा कर देने पर वह संख्या बारह करोड़ हो जाती है। लक्ष्य चौबीस करोड़ प्रतिदिन का है। इसके लिए ठीक दूने युग साधनों की आवश्यकता पड़ेगी। वर्तमान समय में से प्रत्येक अपने हिस्से का एक और जो नागा करेंगे उनके बदले का एक इस प्रकार दो और नए ऐसे युग साधक उत्पन्न करें जो प्रातःकाल पाँच मिनट की उपरोक्त साधना में संकल्प पूर्वक सम्मिलित हों। जो व्रत लें उसे निभाएँ। इसका विवरण रखने का उत्तरदायित्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाध्याय मंडल के संचालक को सौंपा जाए। जो किसी के द्वारा न करने की स्थिति से अवगत रहे और उस कमी की पूर्ति अन्य लोगों से कराता रहे। इस प्रयोजन के लिए वही इतने लोगों से उपरोक्त युग साधना कराने का उत्तरदायित्व उठाए। उनका एक कर्त्तव्य यह भी है कि अपने संपर्क क्षेत्र की जप संख्या की मासिक जानकारी शांति कुञ्ज हरिद्वार पहुँचाते रहें जिससे यह पता चलता रहे कि प्रति दिन चौबीस करोड़ जप के निर्धारण में कितनी कमी पड़ रही है या उसकी किस क्षेत्र में कितनी पूर्ति हो रही है।

सामूहिकता की शक्ति भौतिक क्षेत्र में बहुत कारगर सिद्ध होती है और उसका प्रतिफल हाथों हाथ देखने को मिलता है। बुहारी, रस्सा, सेना, संयुक्त परिवार, झुंड, गिरोह, संगठन आदि उदाहरण यह बताते हैं कि बिखराव का केंद्रीकरण कितना सशक्त होता है। आतिशी शीशे पर सूर्य किरणों का चमत्कार तत्काल आग लगने के रूप में सभी ने देखा है। प्रज्ञा परिजनों की उपरोक्त संयुक्त साधनां परिस्थितियों के सुधार, परिष्कार में असाधारण भूमिका संपन्न करेगी। सिपाहियों की टुकड़ी यदि कदम मिलाकर एक ध्वनि उत्पन्न करे तो जिस लोहे के पुल पर से वह चल रही है, वह धँसक या गिर सकता है। पायल की क्रमबद्ध आवाज हाल की छत को गिरा सकती है। यह संयुक्त शब्द शक्ति का चमत्कार है। प्रज्ञा परिजन एक मन से, एक उद्देश्य से एक प्रक्रिया अपनाकर एक समय में एक निर्धारण के अनुरूप साधना करें तो वह थोड़ी छोटी होते हुए भी इतना बड़ा प्रयोजन पूरा कर सकती है जिससे विकृतियों, विषाक्तताओं का निराकरण हो सके और उसके स्थान पर उज्ज्वल भविष्य का, प्रज्ञा युग के अवतरण का सुनिश्चित आधार खड़ा हो सके।

इस विशिष्ट साधना का महत्त्व सभी प्रज्ञा परिजन गंभीरता पूर्वक समझें और उसे कार्यान्वित करने में अपनी जागरूकता एवं तत्परता का परिचय दें। इस साधना को प्रज्ञा पुरश्चरण नाम दिया गया है तथा सभी परिजनों से उसे जन-जन तक व्यापक बनाने का अनुरोध किया गया है। युग परिवर्तन की इस वेला में आद्यशक्ति को युग शक्ति के रूप से प्रतिष्ठित होना है। परिजनों की नैष्ठिक परीक्षा का ठीक यही समय है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामूहिक धर्मानुष्ठानों से वातावरण संशोधन

जिस प्रकार मनुष्य में शरीर और प्राण के दो तत्त्व हैं उसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ का दृश्यमान स्वरूप और अदृश्य गुण होते हैं। जड़ के भीतर चेतन भी काम करता है। पदार्थ दीखता है—उसका प्राण अदृश्य रहता है। स्थूल जगत के भीतर भी सूक्ष्म-अदृश्य जगत है जो प्रायः आकाश में भरा रहता है। यह दृश्य की तुलना में अदृश्य असंख्य गुना शक्तिशाली होता है।

वायुमंडल की शुद्धता अशुद्धता का प्रभाव प्राणियों के शरीरों, वनस्पतियों और मौसमों पर पड़ता है। वातावरण चेतनात्मक होता है। उससे चेतन प्राणियों के चिंतन और चरित्र पर प्रभाव पड़ता है। गुण, कर्म, स्वभाव को यों मनुष्य अपने प्रयत्नों से—परिवार एवं संपर्क प्रभाव से बनाता बिगाड़ता है। पर इस तथ्य को भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि उसमें अदृश्य वातावरण की भी अति महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

वातावरण चेतनात्मक है। उसका प्राण प्रवाह के स्तर से संबंध है। सतयुग में ऐसा अदृश्य प्राण प्रवाह चलता था जिससे व्यक्तियों की भावना, मान्यता और आकांक्षा प्रभावित होती थी। गुण-कर्म-स्वभाव में उत्कृष्टता भरी रहती थी। चिंतन, चरित्र और व्यवहार में आदर्शवादिता का परिपूर्ण समावेश रहता था। यों इस दिशा में मानवी प्रयत्न भी चलते थे पर उन्हें सफल बनाने में अदृश्य वातावरण की भूमिका—अनुकूलता का भी भारी योगदान रहता था।

इन दिनों अदृश्य जगत के दोनों ही पक्ष अपने-अपने ढंग की विषाक्तता से भरते जा रहे हैं। धुंआ, कोलाहल, विकिरण की अवांछनीय अभिवृद्धि से शरीरों, हाथों पदार्थों के लिए अनेकानेक प्रकार के भँवर खड़े हो रहे हैं और खंड प्रलय जैसी विभीषिका सामने खड़ी दीखती है। भय आतंक से संसार भर में असुरक्षा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनिश्चितता की आशंका संव्याप्त है। दूसरा वातावरण पक्ष और भी बुरी स्थिति में हैं। लोकमानस में संकीर्ण स्वार्थपरता, विलासिता, निष्ठुरता, प्रवंचना, उच्छृंखलता जैसे आसुरी तत्त्व अनायास ही भरते जा रहे हैं। कुछ समय पूर्व लोग परिस्थितिवश अपराध करते थे अब परिस्थिति नहीं मनःस्थिति कारण बन गई। संपन्नों में डकैती, बेईमानी—भरे पूरे गृहस्थों में व्यभिचारी प्रवृत्ति देखकर आश्चर्य होता है। धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों के नेता, प्रवक्ता उससे सर्वथा प्रतिकूल आचरण करते देखे जाते हैं जैसा कि वे जनसाधारण को उपदेश करते हैं। विद्वानों में, बुद्धिवादियों के निजी जीवन में अनपढ़, अशिक्षितों जैसे तो नहीं पर दूसरी तरह वे इतने अंधविश्वास और दुर्व्यसन पाए जाते हैं कि कई बार तो उनके विद्वान होने तक में संदेह उठता है। व्यक्तित्व की दृष्टि से पिछड़े जाने वाले लोगों की अपेक्षा प्रगतिशीलों में पाई जाने वाली निकृष्टता अधिक भारी कष्टकारक और विनाशकारी होती है।

ऐसा क्यों होता है, इसका प्रत्यक्ष कारण तो शिक्षा, व्यवस्था, परंपरा, शासन, साहित्य, कला आदि में घुसी अनुपयुक्तता को भी कहा जा सकता है और उसके लिए राजनेताओं, मनीषियों को दोष दिया जा सकता है। गंभीर पर्यवेक्षण करने पर यह खोट प्रचलन प्रवाह तक सीमित नहीं रहता उसकी जड़ अदृश्य वातावरण में विषाक्तता उत्पन्न होती है और विषाक्त वातावरण से लोकमानस में असुरता निकृष्टता बढ़ती भरती चली जाती है। यह एक कुचक्र है जो एकबार चल पड़ने पर टूटने का नाम नहीं लेता।

इस कुचक्र को तोड़ने के लिए परमात्मा की तरह आत्मा को भी अपना उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है। सृजन संतुलन लड़खड़ाने पर सृजेता अवतार लेते और अनियंत्रित स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए प्राणवान प्रवाह उत्पन्न करते हैं। यह अवतार प्रकरण की सूक्ष्म प्रक्रिया का परिचय हुआ। इस सुधार प्रयोजन का दूसरा पथ मनुष्यकृत है जिसे जागृत आत्माएँ ऐसी विषम वेला में आपत्ति धर्म की तरह अपनातीं और सृष्टा के प्रयोजन में हाथ बँटाती हैं, उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म उपचारों का आश्रय लेना पड़ता है। विशालकाय सामूहिक धर्मानुष्ठान प्रायः इसी प्रयोजन के लिए किए जाते हैं।

इस संदर्भ में इतिहास की कुछ घटनाएँ दृष्टव्य हैं। लंका विजय में असुर तो मरे पर अदृश्य वातावरण में विषाक्तता भरी रहने से लक्ष्य का सामयिक समाधान न हुआ, अदृश्य का संशोधन भी होना चाहिए था। इसके लिए भगवान राम ने दश अश्वमेधों का नियोजन किया। उस उपक्रम की साक्षी काशी का दशाश्वमेध घाट अब भी देता है। कुरुक्षेत्र में महाभारत संग्राम के उपरांत कंस, दुर्योधन, जरासंध से तो पीछा छूटा, पर अदृश्य में विषाक्तता भरे रहने से स्थाई समाधान नहीं दीख पड़ा। इसके लिए अध्यात्म उपचार का आश्रय लिया गया और विशाल रूप में राजसूय यज्ञ की भी ऐसी ही अध्यात्म परक योजना बनाई गई जैसी कि महाभारत की मारकाट के निमित्त बनी थी। इस प्रसंग में जो कमी रही थी उसकी पूर्ति परीक्षित पुत्र जन्मजय के नाग यज्ञ के रूप में संपन्न की थी।

सामूहिक धर्मानुष्ठानों से अदृश्य वातावरण की संशुद्धि के और भी अगणित प्रमाण उदाहरण इतिहास-पुराणों में भरे पड़े हैं। अनेक ऋषियों के रक्त संचय से घड़ा भरा गया था। उससे सीता जन्मी और तमिस्रा की स्थिति बदली। देवता असुरों से जब भी हारे तब अपनी विश्रृंखलता की समस्या लेकर संयुक्त रूप से प्रजापति के पास गए। एक स्वर में बोले। ऐसी ही पुकार सुनी भी जाती है। प्रजापति ने उन्हीं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति एकत्रित करके दुर्गा को सृजा और उसने देखते देखते संकट को निरस्त कर दिया। इन कथाओं में प्रकारांतर से इस सिद्धांत का प्रतिपादन है कि देव-मानवों को संयुक्त रूप से अध्यात्म पुरुषार्थ करके, अदृश्य वातावरण की प्रतिकूलता का शमन करके, समाधान करके अनुकूलता उत्पन्न करनी चाहिए।

इन दिनों वायुमंडल की विषाक्तता का परिशोधन करने के लिए, सर्व साधारण से बन पड़ने वाले अध्यात्म क्षेत्र से संपन्न हो सकने वाले दो उपाय आत्मदर्शियों ने सुझाए हैं। एक हरितमा संवर्धन के लिए तुलसी का आरोपण। उसमें दुहरा लाभ है। वातावरण संशोधन के अतिरिक्त उस आधार पर हर घर में आस्तिकता का वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनता है। वनस्पति भगवती की देव प्रतिष्ठा हर आँगन में होने और पूजा-अर्चा का भाव परिष्कार संतुलन रहने से उसका न केवल वायुमंडल पर वरन् वातावरण पर भी उत्साह वर्धक प्रभाव पड़ता है। दूसरा उपाय अग्निहोत्र सुझाया गया है। उसमें भी वायुमंडल के अतिरिक्त वातावरण के परिशोधन की दुहरी क्षमता है। अग्निहोत्र खर्चीली और कर्मकांड परक प्रक्रिया होने से सर्वसाधारण द्वारा अपनाए जाने में कठिनाई प्रतीत होती है। इसलिए स्थिति को देखते हुए उसका नवीनीकरण कर दिया गया है।

आध्यात्म उपचारों में यज्ञ मूर्धन्य है। उसके दो पक्ष हैं। एक मंत्रोच्चार दूसरा हव्य पदार्थों का यजन। दोनों के मिलने से ही समग्र अग्निहोत्र बनता है। प्रज्ञा अभियान द्वारा इसी वर्षा से आरंभ किए गए प्रज्ञा पुनश्चरण में इन दोनों ही पक्षों का समान समावेश है। प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक को कहा गया है कि वे इस युग अनुष्ठान को संपन्न करने में उत्साहपूर्वक भाग लें और अपने क्षेत्र से उसमें भागीदार बनाने के लिए नए लोगों को ढूँढ़ें। उन्हें अवगत और सहमत करने की प्रक्रिया चलाएँ ताकि वस्तु स्थिति के समझने के उपरांत नए भागीदार मिलने मे कोई अवरोध न रहे।

प्रज्ञा पुरश्चरण का स्वरूप एवं कार्यक्रम इस प्रकार है—

(१) सूर्योदय के समय जो, जहाँ, जैसी भी स्थिति में है अपना सामान्य काम-काज रोक कर आँखें बंद करके, हाथ जोड़कर पाँच मिनट गायत्री का मानसिक जप करें। सविता सूर्य का ध्यान करें। समय पूरा होने पर उस उपचार की परिणति को अदृश्य आकाश में वातावरण शोधन के लिए उछाल देने का मानसिक संकल्प करें।

(२) महीने में एक बार एक स्थान पर सभी प्रज्ञा पुरश्चरण रखें, भागीदार एकत्रित हों और 'प्रज्ञा यज्ञ' का आयोजन संपन्न करें। यह गाँव या मुहल्ले का हो सकता है। एक दिन पूर्णिमा का अथवा महीने का अंतिम अवकाश दिन को रखा जा सकता है।

प्रज्ञा यज्ञ का स्वरूप यह है—पाँच घृत दीपक प्रज्वलित किए जाएँ पाँच-पाँच अगरबत्तियों के पाँच गुच्छक जलाए जाएँ। उन्हें एक चौकी पर गायत्री चित्र के साथ प्रतिष्ठित किया जाए। उपस्थित लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के मस्तक पर चंदन लगाकर उन्हें याज्ञिक बनाया जाए। यह सभी मिल-जुलकर चौबीस बार गायत्री मंत्रोच्चार करें। यह कृत्य प्रायः पंद्रह मिनट में संपन्न हो जाता है।

इसके उपरांत ज्ञान यज्ञ आरंभ होता है। पंद्रह मिनट युग संगीत, एक घंटा प्रज्ञा प्रवचन। प्रज्ञा प्रवचन में मात्र इस वर्ष की प्रज्ञा अभियान पत्रिका के कुछ लेख एक घंटे तक सुनाए जाएँ, इस अवधि में प्रायः १२-१५ पृष्ठ सुनाए जा सकते हैं। इसका चयन स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कर लिया जाए। पूर्ण अभ्यास करके अपने लोगों में से कोई या कई उन्हें इस प्रकार सुनाएँ जिसमें भावनात्मक अभिव्यक्ति भी जुड़ी रहे और उपस्थित लोग अभीष्ट प्रेरणा ग्रहण कर सकें। सवा घंटे का यह ज्ञान यज्ञ, पंद्रह मिनट के अग्निहोत्र के साथ जुड़कर पूरे डेढ़ घंटे का हो जाता है। यह मासिक अग्नि होत्र दैनिक पाँच मिनट की जप-साधना की समन्वित प्रक्रिया कही जा सकती है। दोनों के मिलन से ही प्रज्ञा पुरश्चरण की क्रम व्यवस्था समान बनती है।

प्रज्ञा परिजनों की संख्या २४ लाख है। पाँच मिनट में १०० गायत्री मंत्र जपे जा सकते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन ४ करोड़ जप हो जाता है। पूर्ण लक्ष्य १२५ करोड़ जप प्रतिदिन का है। हर विचारशील परिजन को प्रज्ञा पुरश्चरण में भागीदार बनाएँ तो यह लक्ष्य देखते-देखते पूरा हो सकता है।

इन दिनों स्वाध्याय मंडल की प्रमुख संगठन इकाइयाँ बनी हुई हैं। उन्हें जहाँ प्रज्ञा अभियान को अपने छोटे कार्य क्षेत्र में कार्यान्वित करने का काम सौंपा गया है वहाँ उन्हें ही अपने-अपने संपर्क क्षेत्र में प्रज्ञा पुरश्चरण का लेखा-जोखा रखने और प्रक्रिया को पाँच गुनी अधिक बढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वे शांतिकुंज हर महीने यह सूचना भेजते रहेंगे कि कितने सदस्यों द्वारा कितना पुरश्चरण संपन्न हो रहा है। यदि कुछ लोग कारणवश छोड़ बैठें तो उनकी पूर्ति अन्यान्यों से करानी चाहिए अन्यथा संकल्प संख्या पूरी न होने की अनिश्चितता उत्पन्न होगी। उस गड़बड़ी का संतुलन सही करते रहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की जिम्मेदारी केंद्र की भी है और संस्थानों की भी। इस शुभारंभ का सुसंचालन भी ठीक प्रकार चलना चाहिए।

सामूहिकता में असाधारण शक्ति है। निर्जीव वस्तुएँ एक और एक मिलकर ग्यारह बनने जैसा—नया सिद्धांत खड़ा होता है। प्रस्तुत पुरश्चरण में सवा करोड़ व्यक्तियों की श्रद्धा भावना का समन्वय बहुत बड़ा तथ्य है। हर व्यक्ति का सौ जप होने से भी एक समय, एक उद्देश्य, एक विधान तथा एक लक्ष्य का समन्वय होने से चमत्कारी परिणति उत्पन्न होने की बात सुनिश्चित है। जप संख्या तो हर व्यक्ति से कई-कई घंटे जप कराने से कम मनुष्यों द्वारा भी पूरी हो सकती है। पर अधिक लोगों का अधिक श्रद्धा और सर्वथा निस्वार्थ भाव से—अवैतनिक रूप से किया गया जप साधना कहीं अधिक उत्कृष्ट एवं प्रभावी सिद्ध हो सकेगा।

प्रस्तुत प्रज्ञा पुरश्चरण के साथ जुड़ी हुई एकात्मक प्रक्रिया वातावरण के परिशोधन-परिष्कार में वैसी ही अद्भुत परिणति उत्पन्न कर सकती है जैसी कि दिव्यदर्शियों ने समझी और समझाई है। इसलिए दूरदर्शिता इसी में है कि न केवल अपना शरीर परिवार सँभाला जाए वरन् संव्याप्त वातावरण के संबंध में भी गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए। सामूहिक धर्मानुष्ठान की महत्ता इसी संदर्भ में अनुभव की जानी चाहिए और उत्साहपूर्वक उसे अपनाया जाना चाहिए। भाव समन्वय और सामूहिक धर्मानुष्ठान की इस पुनीत प्रक्रिया के सहारे उस महान प्रयोजन की पूर्ति हो सकती है जिसके सहारे वायुमंडल और वातावरण की विषाक्तता हट सके। साथ ही उज्ज्वल भविष्य के—प्रज्ञा युग के अवतरण का सुयोग बन सके।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org